# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

## धर्मशाला, परिसर-एक

## हिंदी विभाग

कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम,

कार्यक्रम परिणाम,

पाठ्यक्रम परिणाम एवं पाठ्य सामग्री (2022-23)

स्नातकोत्तर (हिंदी)

भाषा संकाय

# कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम (स्नातकोत्तर हिंदी)

कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम **PSO[1]-** विद्यार्थियों को लघु शोध-प्रबंध एवं शोध-पत्र लेखन हेतु प्रेरित करना

कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम **PSO[2]-** विद्यार्थियों को कक्षा में चर्चा-परिचर्चा एवं संवाद हेतु सहभागी बनाना

कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम **PSO[3]-** विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण-पद्धति का विकास करते हुए सृजनात्मक उन्मेष पर बल |

## कार्यक्रम परिणाम स्नातकोत्तर (हिंदी)

कार्यक्रम परिणाम **PO[1]** - विद्यार्थियों के भीतर पाठ वाचन की परम्परा का विकास करना

कार्यक्रम परिणाम **PO[2]**- साहित्यिक पाठ के सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक पाठ हेतु प्रोत्साहन

कार्यक्रम परिणाम **PO[3]**- विद्यार्थियों के भीतर व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक अभिक्षमता का विकास करना

कार्यक्रम परिणाम **PO[4]-** साहित्यिक सौन्दर्य-बोध के साथ विद्यार्थियों की संवेदनात्मक एवं रागात्मिका-शक्ति का विकास

## हिन्दी विभाग भाषा संकाय

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अधीन स्थापित)

धर्मशाला,जिला-कांगड़ा,हिमाचल प्रदेश-176215

www.cuhimachal.ac.in

**पाठ्यक्रम कूट-संकेत :** एच.आई.एल. 405 [HIL405] **श्रेयांक: 2**

**पाठ्यक्रम शीर्षक :** जनपदीय भाषा साहित्य: काँगड़ी बोली के संदर्भ में

**पाठ्यक्रम शिक्षक:** डॉ. प्रिया शर्मा

**श्रेय तुल्यमान** : 2[ एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / व्यावहारिक / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों कार्य के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित कार्य/ वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के समान है ]

**पाठ्यक्रम उद्देश्य**:

- छात्रों को जनपदीय भाषा- बोलियों तथा उनमें सृजित साहित्य की जानकारी प्रदान करने से गाँव और राष्ट्र के बीच तादात्म्य स्थापित होगा, जिससे राष्ट्रीय सद्भावना का विकास होगा।
- काँगड़ा जनपदीय बोली का अध्ययन करने से इस जनपद की बोलियों का उन्नयन होगा, इससे हिंदी भाषा व साहित्य का विकास होगा।
- जीवन मूल्यों के साथ पारंपरिक व्यवहारों को पकड़े रखना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

**पाठ्यक्रम परिणाम :**

- जनपदीय साहित्य के अध्ययन से संस्कारित सहानुभूति की भावना से छात्रों में राष्ट्रीय संचेतना का बोध होगा।
- छात्रों को आंचलिक जन-जीवन, संस्कृति तथा सामयिक बदलावों की जानकारी मिलेगी।
- छात्रों के अंतर्मन में बौद्धिकता, मर्मस्पर्शिता, रसवत्ता तथा लयवत्ता का उन्नययन होगा।

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

**उपस्थिति अनिवार्यता** : पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है| न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

**मूल्यांकन मापदंड :** 1. मध्यावधि परीक्षा - 20%

2. सत्रांत परीक्षा - 60%

3. सतत आतंरिक मूल्यांकन - 20 %

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु -**

**इकाई –1** **(4 घंटे)**

1) जनपदीय बोलियाँ: अर्थ एवं परंपरा
2) काँगड़ी बोली: अर्थ, परंपरा एवं क्षेत्र विस्तार
3) काँगड़ी (हिमाचली) का भाषा वैज्ञानिक स्वरूप एवं क्षेत्रीय ध्वनि रूप

**इकाई-2** **(4 घंटे)**

1) स्वतंत्रताकालीन लोक गायन
2) स्वतंत्रताकालीन काँगड़ी प्रतिनिधि कवि (पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम तथा अन्य कवि)
3) काँगड़ी कविता एवं प्रतिनिधि कवि (1966-1980 तक)

**समीक्षा एवं व्याख्या:**

**(क)** सामाजिक, श्रृंगारिक और आज़ादी चेतना संबंधी कविताएँ
पुस्तक: "पहाड़ी सरगम" पाँच कविताएँ
लेखक: "पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम

**(ख)** पुस्तक: "मेरा देश म्हाचल"
लेखक: " पीयूष गुलेरी" (प्रथम पाँच कविताएँ)

**(ग)** पुस्तक: " चेते"
लेखक: गौतम शर्मा व्यथित (प्रथम पाँच कविताएँ)

**इकाई-3** **(4 घंटे)**

1) काँगड़ी कथा-साहित्य की विकास यात्रा
2) प्रतिनिधि काँगड़ी कहानीकारों का अध्ययन

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

3) काँगड़ी उपन्यास की विकास यात्रा

**समीक्षा एवं व्याख्या:**

**(क)** कहानी: " नूरां"
लेखक: देसराज डोगरा (पत्रिका " हिमभारती" हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला)

**(ख)** उपन्यास: " जौंडा" पुरस्कृत
लेखक: रवि मंढोतरा ( प्रकाशक- पत्रिका "हिमभारती" हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला)

**इकाई -4** **(4 घंटे)**

1) काँगड़ी में लिखित एकांकी एवं नाटकों की विकास यात्रा
2) प्रमुख एकांकीकारों एवं नाटककारों का परिचय

**समीक्षा एवं व्याख्या:**

**(क)** एकांकी: "बड़ा बड्डा माहणू"

लेखक: प्रत्यूष गुलेरी ( प्रकाशक " हिमभारती" वर्ष-1972)

**इकाई -5** **(4 घंटे)**

1) निबंध: अर्थ एवं स्वरूप
2) काँगड़ी में लिखित सांस्कृतिक एवं समीक्षात्मक निबंध

**समीक्षा एवं व्याख्या:**

**(क)** निबंध: "दयालु धौलधार"

लेखक: वेद प्रकाश अग्नि ( हिमाचल प्रदेश भाषा विभाग, चंगेर फुल्लां दी कने पहाड़ी लेखमाला)

**संभावित ग्रन्थ :**

**आधार ग्रंथ**

हिमाचल प्रदेश लोक संस्कृति और साहित्य गौतम शर्मा व्यथित, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

| | |
|---|---|
| | दिल्ली |
| हिमाचल के लोकगीत | गौतम शर्मा व्यथित, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली |
| हिमाचल का हिंदी साहित्य का इतिहास | सुशील कुमार फुल्ल,वंदना पब्लिशर्स लुधियाना |
| हिमाचल प्रदेश की लोक कथाएँ | सुदर्शन वशिष्ठ, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास दिल्ली |
| गद्दी | अमर सिंह रणपतिया, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला |
| पहाड़ी साहित्य कने लोक साहित्य | गौतम शर्मा व्यथित, शीला प्रकाशन, नेरटी काँगड़ा |
| हिमाचली लोक कथां | प्रत्यूष गुलेरी |
| हिमाचल के लोक नाट्य | तुलसी रमण संपादक, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला |
| पत्रिका हिमभारती | हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला |
| जनपदीय भाषाओं का साहित्य | रमण शांडिल्य, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली |
| जनपदीय भाषा साहित्य (अवधी काव्य) | सूर्य प्रकाश दीक्षित, संपादक प्रकाशन केंद्र, लखनऊ |


(डॉ प्रिया शर्मा)

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

**हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय**
Central University of Himachal Pradesh
**(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)**

**भाषा संकाय (हिंदी विभाग)**
**स्नातकोत्तर (हिंदी) प्रथम सेमेस्टर**

**पाठ्यक्रम कूट** : HIL- 402 (क) श्रेयांक : 4
**पाठ्यक्रम शीर्षक : हिंदी कथा साहित्य**
**पाठ्यक्रम शिक्षक** : डॉ. चंद्रकांत सिंह

**श्रेयांक** : 4 [ एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों / ट्युटोरियल / व्यावहारिक कार्य के घंटे 5 और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य , निर्धारित कार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पत्र लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के घंटे के समान है 15।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य**:

- हिंदी कथा साहित्य पाठ्यक्रम हिंदी की प्रतिनिधि कहानियों और उपन्यासों पर आधारित है | इस पाठ्यक्रम के द्वारा कथा साहित्य की समूची परंपरा का आद्योपांत अध्ययन किया जायेगा |
- पाठ्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न प्रवृत्तियों के अध्ययन-मनन के साथ कृति विशेष का अध्ययन है जिससे कि कृति की व्याख्या, रचनाकार के दृष्टिकोण और वर्त्तमान परिदृश्य में कृति की प्रासंगिकता का अध्ययन किया जा सके |
- छात्रों को हिन्दी साहित्य की विशिष्ट कथा संपदा से परिचित कराते हुए सम्पूर्णता से रचना के विविध पक्षों का उद्घाटन भी पाठ्यक्रम का ध्येय है |

**पाठ्यक्रम परिणाम** :

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी हिंदी कथा साहित्य की समृद्धतम ज्ञान-धारा से परिचित हो सकेंगे |
- यह पाठ्यक्रम कथा की सूक्ष्म परतों को विद्यार्थियों के समक्ष उद्घाटित कर सकेगा जिससे कि विद्यार्थी संवेदनात्मक एवं ज्ञानात्मक दोनों दृष्टि से समुन्नत हहो सकें |
- पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों के भीतर गहन अंतर्दृष्टि विकसित होगी जिससे कि लेखक, रचना एवं रचना-प्रक्रिया के सम्पूर्ण घटकों की जानकारी मिल सके |

डॉ. चन्द्रकांत सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

- कथा-साहित्य पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों की आलोचकीय क्षमता का भी होगा जिससे कि रचना विशेष का सम्यक विवेचन हो सके|
- साहित्य के इतर अन्य अनुशासनों में शोध की विधियों एवं प्रविधियों से विद्यार्थी लाभान्वित होंगे

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है । न्यूनतम %75कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है ।

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा : 40
2. सत्रांत परीक्षा : 120
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन: 40

**<u>पाठ्यक्रम विषयवस्तु –</u>**

**इकाई 1-हिंदी कथा साहित्य : उद्भव और विकास** (08 घंटे)

क) कहानी :परिभाषा एवं स्वरूप

ख) उपन्यास :परिभाषा एवं स्वरूप

ग) हिंदी कहानी : उद्भव और विकास

घ) हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास

**इकाई 2-प्रेमचंदपूर्व हिंदी कथा साहित्य** (08 घंटे)

क) प्रेमचंदपूर्व हिंदी कहानियों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

ख) भारतेन्दुयुगीन उपन्यासों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

ग) 'एक टोकरी भर मिट्टी' (कहानी) : व्याख्या एवं समीक्षा

घ) 'उसने कहा था' (कहानी) : व्याख्या एवं समीक्षा

ङ) 'परीक्षा गुरु' (उपन्यास) : व्याख्या एवं समीक्षा

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

**इकाई 3-प्रेमचंदयुगीन हिंदी कथा साहित्य** (08 घंटे)

क) प्रेमचंदयुगीन हिंदी कहानियों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
ख) 'कफ़न' (कहानी) : व्याख्या एवं समीक्षा
ग) प्रेमचंदयुगीन उपन्यासों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
घ) 'गोदान' (उपन्यास) : व्याख्या एवं समीक्षा

**इकाई 4-प्रेमचंदोत्तर हिंदी कथा साहित्य** (08 घंटे)

क) प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानियों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
ख) 'तीसरी कसम' (कहानी) : व्याख्या एवं समीक्षा
ग) प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
घ) 'शेखर एक जीवनी', भाग-1 (उपन्यास) : व्याख्या एवं समीक्षा
ङ) 'बाणभट्ट की आत्मकथा' (उपन्यास) : व्याख्या एवं समीक्षा
च) 'मैला आँचल' (उपन्यास) : व्याख्या एवं समीक्षा

**इकाई 5-समकालीन हिंदी कथा साहित्य** (08 घंटे)

क) समकालीन हिंदी कहानियों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
ख) 'परिंदे' (कहानी) : व्याख्या एवं समीक्षा
ग) समकालीन उपन्यासों की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
घ) 'रागदरबारी' (उपन्यास) : व्याख्या एवं समीक्षा
ङ) 'तमस' (उपन्यास) : व्याख्या एवं समीक्षा

**संभावित सन्दर्भ ग्रंथ सूची –**


1. साहित्य विधाओं की प्रकृति — देवीशंकर अवस्थी
2. कहानी की रचना-प्रक्रिया — परमानंद श्रीवास्तव
3. कहानी : अनुभव और अभिव्यक्ति — राजेन्द्र यादव
4. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति — देवी शंकर अवस्थी
5. उपन्यास की संरचना — गोपाल राय


डॉ. ...
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

| | | |
|---|---|---|
| 6. | उपन्यास का विकास | मधुरेश |
| 7. | आधुनिक हिंदी उपन्यास | सं भीष्म साहनी एवं डॉ. रामजी मिश्र |
| 8. | प्रेमचंद और उनका युग | रामविलास शर्मा |
| 9. | अठारह उपन्यास | राजेन्द्र यादव |
| 10. | अज्ञेय के उपन्यास | गोपाल राय |
| 11. | उपन्यासकार हजारी प्रसाद द्विवेदी | त्रिभुवन सिंह |

डॉ. चन्द्रकान्त
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल
धर्मशाला-17622

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

**हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय**

Central University of Himachal Pradesh

**(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)**

**भाषा संकाय (हिंदी विभाग)**

**स्नातकोत्तर (हिंदी) प्रथम सेमेस्टर**

**पाठ्यक्रम कूट** : HIL- **403 (क)** श्रेयांक : 02

**पाठ्यक्रम शीर्षक** : आधुनिक काव्य : भारतेंदु से छायावाद तक

**पाठ्यक्रम शिक्षक** : डॉ. चंद्रकांत सिंह

**श्रेयांक** : 4 [ एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / गतिविधियों शिक्षक नियंत्रित / ट्युटोरियल / व्यावहारिक कार्य के घंटे 5 और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य , निर्धारित कार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पत्र लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के घंटे के समान है 15।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य** :

- विद्यार्थियों को नवजागरणकालीन पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियों से परिचित कराना |
- भारतेंदुयुगीन, द्विवेदीयुगीन, छायावाद युगीन प्रवृत्तियों एवं रचना-प्रक्रिया को उद्घाटित करना
- खड़ीबोली के विकास एवं संवर्धन की जानकारी उपलब्ध कराना |

**पाठ्यक्रम परिणाम** :

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों को आधुनिक काव्यधारा की जानकारी मिल सकेगी |
- अध्ययन के फलस्वरूप विद्यार्थी आधुनिक काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियों का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे |
- रचना के पाठ से विद्यार्थियों की आलोचनात्मक प्रतिभा का विकास होगा |
- तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ में समझ का विकास |
- प्रतिनिधि कवियों की सृजनशीलता से विद्यार्थी के परिज्ञान का विस्तार |

**उपस्थिति अनिवार्यता** :

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75 % कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड** :

1. मध्यावधि परीक्षा : 20%
2. सत्रांत परीक्षा : 60%
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन: 20% (100 अंक में 20 अंक)

**<u>पाठ्यक्रम विषयवस्तु –</u>**

**इकाई** -1 **(04 घंटे)**

- आधुनिक काव्य का परिचय
- नवजागरण अर्थ एवं स्वरूप
- भारतेन्दुयुगीन काव्य की मूल प्रवृत्तियाँ

**इकाई**- 2 **(04 घंटे)**

- द्विवेदीयुगीन काव्य की मूल प्रवृत्तियाँ
- मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में परंपरा और आधुनिकता
- समीक्षा एवं व्याख्या : साकेत (नवम सर्ग)

**इकाई**- 3 **(04 घंटे)**

- छायावाद की मूल प्रवृत्तियाँ
- छायावाद का प्रकृति-चित्रण
- छायावाद का भाषा-वैशिष्ट्य
- प्रसाद का सामरस्य सिद्धांत
- समीक्षा एवं व्याख्या : कामायनी (श्रद्धा सर्ग)

**इकाई**- 4 **(04 घंटे)**

- मुक्त छंद और निराला
- निराला के काव्य में जागरण का स्वर
- समीक्षा एवं व्याख्या : राम की शक्ति-पूजा

डॉ. चन्द्रकला सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

**इकाई**- 5 (04 **घंटे**)

- सुमित्रानंदन पन्त की सौन्दर्य-दृष्टि
- महादेवी वर्मा के काव्य में गीति-योजना
- समीक्षा एवं व्याख्या : 'परिवर्तन' एवं 'प्रथम रश्मि' (कविता)
- समीक्षा एवं व्याख्या : 'मैं नीर भरी दुःख की बदली', 'बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ', 'फिर विकल हैं प्राण मेरे' (कविता)

**संभावित सन्दर्भ ग्रंथ सूची –**


| | | |
|---|---|---|
| 1. | भारतीय नवजारण और समकालीन संदर्भ | कर्मेंदु शिशिर |
| 2. | छायावाद | नामवर सिंह |
| 3. | निराला की साहित्य साधना 1,2, 3 | रामविलास शर्मा |
| 4. | निराला : आत्महंता आस्था | दूधनाथ सिंह |
| 5. | कामायनी : एक पुनर्विचार | मुक्तिबोध |
| 6. | कबीर मीमांसा | डॉ. रामचंद्र तिवारी |
| 7. | पंत और पल्लव | सूर्यकांत त्रिपाठी निराला |
| 8. | जयशंकर प्रसाद | नन्ददुलारे वाजपेयी |
| 9. | आधुनिक हिंदी कविता | कमला प्रसाद |
| 10. | कल्पना और छायावाद | केदारनाथ सिंह |



डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)

## हिंदी विभाग - भाषा संकाय

## स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : **एच.आई.एल. 440** श्रेयांक – **4**

पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिंदी साहित्य का इतिहास: आरंभ से रीतिकाल तक**

पाठ्यक्रम शिक्षक : **डॉ प्रीति सिंह**

श्रेयांक : **4** [एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

**पाठ्यक्रम उद्देश्य :**

- पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को ऐतिहासिक इतिहास के जीवन्त तथा शाश्वत तत्वों के संग्रहण की क्षमता से पूर्ण करना होगा।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास की बहुविस्तृत विरासत से परिचित कराते हुए एक विशेष साहित्यिक परंपरा के गहन अध्ययन और विश्लेषण का अवसर देना होगा।
- पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों को आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल के विभिन्न प्रवृत्तियों से परिचित कराना होगा।
- विद्यार्थी पाठ्यक्रम के अध्ययन से विभिन्न रचनाकारों की सृजनशीलता के विचारों से परिचित होगा।

**पाठ्यक्रम परिणाम :**

- पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों में भावनात्मक, संवेदनात्मक क्षमता का विकास करेंगे।
- पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों में आदर्श यथार्थपरक दृष्टि का विकास करेंगे।
- पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी जीवन में मानवीय मूल्यों को सही रूप में स्थापित कर सकेंगे साथ ही समाज को नयी दिशा भी प्रदान करेंगे।
- साहित्य और इतिहास के अन्तः संबंधों की समझ के साथ विद्यार्थी जागरूक अध्येता बन सकेंगे।

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जासकता है।

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा - 40
2. सत्रांत परीक्षा - 120
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन - 40

**पाठ्यक्रम विषयवस०तु -**

**इकाई –1 साहित्येतिहास लेखन तथा काल विभाजन** (8 घंटे)

क) हिंदी साहित्येतिहास की अवधारणा,

ख) हिंदी साहित्य इतिहास लेखन की परंपरा,

ग) हिंदी साहित्य का इतिहास : काल विभाजन का आधार और नामकरण की समस्या,

**इकाई-2 आदिकाल** (8 घंटे)

क) हिंदी साहित्य का आरंभ, आदिकाल की पृष्ठभूमि,

ख) हिन्दी साहित्य की प्रमुख धाराएं- सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य: प्रमुख प्रवृत्तियाँ

ग) रासो साहित्य, लौकिक साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं कवियों का अध्ययन

**इकाई-3 भक्ति काल (निर्गुण काव्य धारा)** (8 घंटे)

क) भक्ति आंदोलन का उद्भव और उसका अखिल भारतीय स्वरूप,

ख) भक्तिकाल की युगीन परिस्थितियाँ

ग) संत काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवियों का अध्ययन (विशेष कवि- कबीरदास)

घ) सूफी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवियों का अध्ययन (विशेष कवि- जायसी )

**इकाई-4 भक्ति काल (सगुण काव्य धारा)** (8 घंटे)

क) सगुण काव्य का स्वरूप

ख) राम काव्य धारा, प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवियों का अध्ययन (विशेष कवि गोस्वामी तुलसीदास)

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डा. चन्द्रकान्त सिंह
सभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

ग) कृष्ण भक्ति काव्य धारा, प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवियों का अध्ययन (विशेष कवि सूरदास)

घ) हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग: भक्तिकाल

**इकाई-5 रीतिकाल** (8 घंटे)

क) रीतिकालीन पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिवेश)

ख) रीतिकालीन काव्यधाराएं- रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रतिनिधि कवियों का अध्ययन,

ग) अन्य रीति काव्य- (वीर नीति और भक्ति का अध्ययन)

घ) रीतिकालीन काव्य का शास्त्रीय प्रदेय

**संभावित संदर्भ ग्रन्थ सूची :**


1. हिंदी साहित्य का इतिहास - रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास - संपादक डॉ.नगेंद्र,
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल - हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. हिंदी साहित्य:उद्भव और विकास - हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. हिंदी साहित्य की भूमिका - हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. साहित्य और इतिहास दृष्टि - मैनेजर पांडेय
7. साहित्य का इतिहास दर्शन - नलिन विलोचन शर्मा
8. हिंदी साहित्य का अतीत - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
9. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
10. हिंदी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास - डॉ.भगीरथ मिश्र
11. हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास - नंददुलारे वाजपेई
12. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - रामकुमार वर्मा



डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)

## हिंदी विभाग - भाषा संकाय

## स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : **एच.आई.एल. 401 क** श्रेयांक – **2**

पाठ्यक्रम शीर्षक : **भारतीय काव्यशास्त्र**

पाठ्यक्रम शिक्षक : **डॉ प्रीति सिंह**

श्रेयांक : **2** [एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

**पाठ्यक्रम उद्देश्य :**

- भारतीय काव्यशास्त्र पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को काव्य लक्षण, काव्य हेतु से परिचित होगा।
- पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों को काव्य प्रयोजन अर्थात साहित्यिक उद्देश्य से परिचित कराना होगा।
- पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों में भारतीय चिंतन एवं शास्त्रीय चिंतन की समाज का विकास होगा।
- काव्य के प्रमुख सिद्धांत रस अलंकार, ध्वनि आदि से विद्यार्थी परिचित होंगे।

**पाठ्यक्रम परिणाम :**

- पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय मनीषा से परिचित होंगे।
- प्रमुख सिद्धांतों के अध्ययन से विद्यार्थियों में आलोचनात्मक क्षमता का विकास करेंगे।
- पाठ्यक्रम के अध्ययनके द्वारा विद्यार्थियों में साहित्यिक समझ का विकास करेंगे।
- विद्यार्थियों में संवेदनात्मक संवर्धन की क्षमता विकसित करेंगे।

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जासकता है।

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा - 20
2. सत्रांत परीक्षा - 60
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन - 20

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु -**

**इकाई –1 भारतीय काव्यशास्त्र** (4 घंटे)

क) काव्य लक्षण
ख) काव्य हेतु
ग) काव्य प्रयोजन

**इकाई-2 रस सिद्धांत** (4 घंटे)

क) रस का स्वरूप,
ख) रस निष्पत्ति, रस के अंग अथवा विभेद
ग) साधारणीकरण

**इकाई-3 अलंकार सिद्धांत, रीति सिद्धांत** (4 घंटे)

क) अलंकार की मूल स्थापनाएँ एवं स्वरूप,
ख) अलंकारों का वर्गीकरण
ग) रीति सिद्धांत की अवधारणा, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ

**इकाई-4 वक्रोक्ति सिद्धांत, ध्वनि सिद्धांत** (4 घंटे)

क) वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद
ख) ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ
ग) ध्वनि सिद्धांत के प्रमुख भेद

**इकाई-5 औचित्य सिद्धांत** (4 घंटे)

क) औचित्य सिद्धांत प्रमुख की स्थापनाएँ
ख) औचित्य सिद्धांत के प्रमुख भेद
ग) शब्द शक्तियां- अभिधा, लक्षणा, व्यंजना

**संभावित संदर्भ ग्रन्थ सूची :**

1. रस मीमांसा - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

2. संस्कृत आलोचना - बलदेव उपाध्याय
3. काव्यशास्त्र की भूमिका - डॉ नगेंद्र
4. काव्यशास्त्र - भगीरथ मिश्र
5. भारतीय काव्य विमर्श - राममूर्ति त्रिपाठी
6. भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज - राममूर्ति त्रिपाठी
7. भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ तारक नाथ वाली
8. भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ विश्वनाथ उपाध्याय
9. भारतीय काव्यशास्त्र - गणेश त्रियंबक देशपांडे

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

भाषा संकाय, हिन्दी विभाग, सेमेस्टर - प्रथम

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL - 465

पाठ्यक्रम का नाम : *अनुवाद प्रौद्योगिकी*

पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

श्रेयांक : 04

## *अनुवाद प्रौद्योगिकी*

**पाठ्यक्रम का उद्देश्य**

1. विभिन्न ज्ञान अनुशासनों में अनुवाद प्रक्रिया का विकास करना।
2. अनुवाद के माध्यम से अंग्रेजी पाठ्यक्रम की सामग्री को हिंदी में बदलना।
3. अनुवाद को वर्तमान सांस्कृतिक, सामाजिक एवं प्रयोजनपरक प्रविधियों से जोड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष को विकसित करना।
4. भारतीय एवं वैश्विक परिदृश्य में हिंदी को अनुवाद के माध्यम से सम्पन्न भाषा बनाना।
5. अनुवाद अनुशासन को विदेशी और द्वितीय भाषा शिक्षण में एक प्रमुख उपकरण के रूप में विकसित करना।

**पाठ्यक्रम परिणाम (co)**

1. भारत में अनुवाद परंपरा- ऐतिहासिक संदर्भ का परस्पर विचार-विमर्श।
2. सम सांस्कृतिक और विषम सांस्कृतिक भाषाओं मे परस्पर अनुवाद की समस्या : व्यावहारिक पक्ष की ज्ञान प्राप्ति।
3. प्रतीकांतरण (Inter Semiotic Translation) का फिल्म, दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं की ज्ञान प्राप्ति।
4. छात्रों की शैक्षणिक अभिरुचि तथा आस्वादन क्षमता में वृद्धि।

### *इकाई - 1 अनुवाद का सैद्धांतिक पक्ष*

*08 कालखंड*

अनुवाद : परिभाषा, स्वरूप, स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा
अनुवाद की भारतीय परंपरा
अनुवाद की प्रक्रिया नाइडा के अनुसार
अनुवाद के प्रकार : 1. माध्यम 2. प्रक्रिया 3. पाठ
अनुवादक के गुण एवं दायित्व

### *इकाई - 2 आधुनिक अवधारणाएँ*

*08 कालखंड*

सम सांस्कृतिक और विषम सांस्कृतिक भाषाओं मे परस्पर अनुवाद की समस्या
अनुवाद समीक्षा और अनुवाद मूल्यांकन

### *इकाई - 3 अनुवाद की उपादेयता*

*08 कालखंड*

विश्व संस्कृति के संदर्भ में
विश्व साहित्य के संदर्भ में
भारतीय साहित्य के संदर्भ में

07/12/22
डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

7/12/22

14/12/2022
डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

7.12.22

*इकाई - 4* **अनुवाद का अनुप्रयुक्त पक्ष** *08 कालखंड*

बैंकिंग शब्दावली का अनुवाद

खेलकूद की शब्दावली का अनुवाद,

बाज़ार समाचार की शब्दावली का अनुवाद

*इकाई - 5* **कंप्यूटर का सामान्य परिचय और अनुप्रयोग** *08 कालखंड*

कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर

ओ.सी.आर. वाक् प्रौद्योगिकी, वर्तनी जाँचक

मशीनी अनुवाद का ऐतिहासिक सदर्भ

## सहायक - ग्रंथ


1. अनुवाद विज्ञान की भूमिका : कृष्णकुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन
2. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्णकुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली
3. अनुवाद कला: सिद्धांत और प्रयोग : कैलाशचन्द्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
4. अनुवाद सिद्धांत की रूपेरखा : सुरेशकुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. अनुवाद विज्ञान सिद्धांत एवं प्रयोग : नगेन्द्र, (सं.) दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
6. अनुवाद के विविध आयाम; पूरनचंद टंडन, हरीश कुमार सेठी, नई दिल्ली: तक्षशिला प्रकाशन।
7. अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग : प्रो. जो. गोपीनाथन, लोकभारती, दिल्ली
8. अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य : रीतारानी पालीवाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
9. अनुवाद की नई परंपरा और आयाम - गोस्वामी, अन्नपूर्णा और प्रजापति
10. हिंदी भाषा की सामाजिक भूमिका: भोलानाथ तिवारी, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास
11. हिंदी भाषा का समाजशास्त्र: रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
12. भाषाई अस्मिता और हिंदी : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. सूचना प्रौघोगिकी उपकरण एवं व्यावसायिक प्रणालियाँ, रवीन्द्र शर्मा, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी
14. Linguistic Theory of Translation : J.C.Catford, Oxford University Press, London.
15. Language structure & Translation : Nida E.A.,Stanford University Press.
16. Translation &Translating : Roger T.Bell OUP, London
17. Approches to Translation Programme : Peter New Mark, Oxford U. Press
18. The Theory & Practice of Translation : Nida E.A.and Taber Charles, London.
19. Translation & Interpreting- (Ed.) R. Gargesh and K.K. Goswami,Orient Longman, New Delhi.


**पाठ्यक्रम बोध रचना - 465** ***अनुवाद प्रौद्योगिकी***

07/12/22

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

...चल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

7/12/22

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह

...भारी (हिंदी)

...चल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

...-176215

7.12.22

14/12/2022

**हिन्दी विभाग**

**भाषा संकाय**

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अधीन स्थापित)

धर्मशाला,जिला-कांगड़ा,हिमाचल प्रदेश-176215

www.cuhimachal.ac.in

**पाठ्यक्रम शीर्षक : हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा**

**पाठ्यक्रम कूट-संकेत : एच.आई.एल.** 404 क [HIL 404 क ]

**स्तर – 4**

**श्रेय - 02**

**श्रेय तुल्यमान** : [ एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे के बराबर, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं ]

**पाठ्यक्रम परिणाम** : हिन्दी की राष्ट्रवादी काव्य-धारा ने राष्ट्रीय जागरण का जो स्वर प्रस्तुत किया प्रस्तुत पाठ्यक्रम द्वारा उसके अवबोध से विद्यार्थियों को परिचित कराना है | प्रस्तुत पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों को ऐतिहासिक दृष्टि प्राप्त होगी जो उन्हें राष्ट्रीय काव्य-धारा की मूल प्रवृत्तियों को समझने में सहायता प्रदान करेगी | सामाजिक-राजनैतिक परिस्थितियों को समझते हुए हिन्दी की राष्ट्रीय भावधारा को चिन्हित करना, उसके अतुल्य योगदान से विद्यार्थियों को परिचित कराना पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य है |

**अधिगम परिणाम :** हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा का पाठ ग्रहण, सांस्कृतिक-बोध निर्माण एवं भारतीय-चिन्ताधारा की स्वाभाविक समझ प्रस्तुत पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम है | इस पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थी साहित्य की जो समझ अर्जित करेंगे वह भारतीय-चिन्तन के

अनुकूल होगी और हिन्दी कविता के राष्ट्रीय स्वर को भारतीय काव्य-बोध एवं इतिहास-बोध द्वारा प्रस्तुत करेगी |

**उपस्थिति अनिवार्यता** : पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जासकता है |

**मूल्यांकन मापदंड** : 1. मध्यावधि परीक्षा - 20%

2. सत्रांत परीक्षा - 60%

3. सतत आतंरिक मूल्यांकन - 20 % (100 अंक में 20 अंक)

**<u>पाठ्यक्रम विषयवस्तु -</u>**

**इकाई –1** (4 घंटे)

क) नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना
ख) भारतेंदु युगीन कविता की मूल प्रवृत्तियाँ
ग) भारतेंदु की कविता 'भारत दुर्दशा' का पाठ-विवेचन

**इकाई-2** (4 घंटे)

क) द्विवेदी युगीन कविता की मूल प्रवृत्तियाँ
ख) मैथिलीशरण गुप्त की 'आर्य' कविता का पाठ-विवेचन
ग) गया प्रसाद शुक्ल सनेही की कविता 'पावन प्रतिज्ञा' का पाठ-विवेचन

**इकाई-3** (4 घंटे)

क) छायावाद की मूल प्रवृत्तियाँ
ख) निराला की कविता 'भारती वन्दना' का पाठ विवेचन
ग) सुमित्रानंदन पन्त की कविता 'भारत गीत' का पाठ विवेचन

**इकाई -4** (4 घंटे)

क) राष्ट्रीय सांस्कृतिक स्वच्छंदतावादी काव्यधारा की मूल प्रवृत्तियाँ

ख) सुभद्राकुमारी चौहान की कविता 'वीरों का कैसा हो बसंत' का पाठ विवेचन

ग) माखन लाल चतुर्वेदी की कविता 'पुष्प की अभिलाषा' का पाठ विवेचन

घ) रामधारी सिंह दिनकर की कविता 'कलम या कि तलवार' का पाठ विवेचन

**इकाई -5** (4 घंटे)

क) नई कविता की मूल प्रवृत्तियाँ

ख) शिव मंगल सिंह सुमन की कविता 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' का पाठ विवेचन

ग) भारत भूषण अग्रवाल की कविता 'फूटा प्रभात' का पाठ विवेचन

**<u>संभावित ग्रन्थ :</u>**


1. देशभक्ति की कविताएँ , योगेन्द्र दत्त शर्मा (संपादन), प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय,भारत सरकार पटियाला हाउस,नई दिल्ली-110001,परिवर्धित संस्करण -2005
2. राष्ट्रवादी चिन्तक माखन लाल चतुर्वेदी, गोपीनाथ कालभोर, जवाहर पुस्तकालय,सदर बाज़ार,मथुरा (उ.प्र.),प्रथम संस्करण -2000
3. क्रांतिकारी साहित्यकार सुभद्राकुमारी चौहान, सुमित मोहन,कृष्णकांत ब्रदर्स, 1656,बाढ़पुरा कालोनी,सदर रोड,मथुरा,द्वितीय संस्करण – 2007
4. भारतीय साहित्य के निर्माता रामधारी सिंह दिनकर, विजेंद्र नारायण सिंह,साहित्य अकादमी,रवीन्द्र भवन,35, फीरोजशाह मार्ग,नई दिल्ली-110 001 प्रथम संस्करण :2005

**Central University of Himachal Pradesh**
(**Established under Central Universities Act 2009)**
**PO BOX: 21, DHARAMSHALA, DISTRICT KANGRA – 176215, HP.**
**www.cuhimachal.ac.in**
**Course Code: IKS Hindi 01**
**Credits: 02**
**Course Name: Indian Knowledge System**
**Course Duration :01 Semester**

**Credits Equivalent:**
One credit of theory is equivalent to 10 hours of lectures / organised classroom activity / contact hours; 5 hours of laboratory work / practical / field work / Tutorial / teacher-led activity and 15 hours of other workload such as independent individual/ group work; obligatory/ optional work placement; literature survey/ library work; data collection/ field work; writing of papers/ projects/dissertation/thesis; seminars, etc.).

**Course Aim and Objectives:**
Bhārata has a very rich and versatile knowledge system and cultural heritage. The Bhāratīya knowledge system was developed during the Vedic period, the Saraswatī-Sindhu Civilization, the Middle ages and is being practiced till the conditions of modern times. In this basic course, a special attention is given to the historical prospective of ideas occurrence in the ancient society, and implication to the concept of material world, and religious, social, and cultural beliefs. On the closer examination religion, culture and science have appeared epistemological very rigidly connected in the Bhāratīya knowledge system. As such, this land has provided invaluable knowledge stuff to the society and the world in all the spheres of life; e.g. aeronautics, astronomy, mathematics, life science, medical science, architecture, polity, trade, art, music, dance, literature, and drama.
Over the period, most of the works were either lost or confined to the libraries or personal possessions. However, some of the activities are still in practice of the masses unknowing the scientific and practical values. Given the nature of course and diversity of the learners' fields, the course is designed to provide a broad-spectrum of the Bhāratīya knowledge system. The main objectives of this course are as follows:

- **Creating awareness amongst the youths about the true history and rich culture of the country;**
- **Understanding the scientific value of the tradition and culture of the Bhārata;**
- **Promoting the youths to do research in the various fields of Bhāratīya knowledge tradition;**
- **Converting the Bhāratīya wisdom into the applied aspect of the modern scientific paradigm;**
- **Adding career, professional and business opportunities to the youths.**

**Learning Outcomes:**

It is expected that after completing this course the students would be quite aware of the rich and versatile knowledge system and cultural heritage of Bhārata. They will be clear about the following points:

• The knowledge system was developed during the Vedic period, the Saraswatī-Sindhu Civilization, the Middle ages and practiced knowingly or unknowingly till date;

• In Bhārata, a special attention was given to the reasons of ideas occurrence, and connection with the concept of material world, and religious, social, and cultural beliefs;

• Bhārata was quite advanced in arts, literature, music, dance, drama, and all other spheres of life including aeronautics, science, astronomy, mathematics, life science, medical science, and architecture.

• Awareness amongst the youths about the true history and rich culture of the country;

• The youth will be an individual with a great sense of patriotism and nation-pride.

• The youths will be self-motivated to do research in the various fields of Bhāratīya knowledge tradition;

• The students would be able to convert Bhāratīya wisdom into the applied aspect of the modern scientific paradigm;

• They will be competent enough to choose the IKS as career at the professional and business levels.

It is also expected that after completion of this course the students will have a holistic insight into the understanding of matter and life.

Attendance Requirements:

A minimum of 75% attendance is a must failing which a student may not be permitted to appear in the examination.

**Credits: 2 (20 Hours)**

**Course Contents**

**UNIT -I: Bhāratīya Civilization and Development of Knowledge System (4 hours)**

Antiquity of civilization, Discovery of the Saraswatī River, the Saraswatī-Sindhu Civilization, Traditional Knowledge System, The Vedas, School of Philosophy (6+3), Ancient Education System, the Takṣaśilā University, the Nālandā University

**UNIT-II: Arts, Literature, and Scholars in Ancient Bharat (4 hours)**

Art, Music, and Dance, Naṭarāja– A Masterpiece of Bhāratīya Art, Literature, Life and works of Agastya, Lopāmudrā, Ghoṣā, Vālmīki, Patañjali, Vedavyāsa, Yājňavalkya, Gārgī, Caraka, Suśruta, Kaṇāda, Kauṭīlya, Pāṇini, Thiruvalluvar, Āryabhaṭa, Bhāskarācārya, Mādhavācārya.

**UNIT-III: Ancient Bhartiya Contribution towards Science & Mathematics(4 hours**)

Sage Agastya's Model of Battery, Vedic Cosmology and Modern Concepts, Concept of Zero and Pi, Number System, Phythagoras Theroem, and Vedic Mathematics; Kerala School for Mathematics and History of Culture of Astronomy, Astronomical _ of day, year and Yuga.

**UNIT-IV: Ancient Bhartiya Engineering, Technology & Architecture(4 hours)**

Pre-Harappan and Sindhu Valley Civilization, Juices, Dyes, Paints and Cements, Glass and Pottery, Metallurgy, Iron Pillar of Delhi, Rakhigarhi, Mehrgarh, Sindhu Valley Civilization, Marine Technology, and Bet–Dwārkā.

**UNIT-V: Ancient Bhartiya Contribution in Environment & Health(4 hours)**
Ethnic Studies, Life Science in Plants, Agriculture, Ecology and Environment, Āyurveda, Integrated Approach to Healthcare, Surgery, and Yoga, etc.

**Text books:**
1. Textbook on The Knowledge System of Bhārata by Bhag Chand Chauhan, Under Publication (2021).
2. Knowledge Traditions and Practices of India (CBSE Textbook Modules for Class XI) edited by Prof. Kapil Kapoor and Prof. Michel Danino, CBSE Delhi–110 092 (2012).
**Reference Books:**
1. Pride of India- A Glimpse of India's Scientific Heritage edited by Pradeep Kohle et al. Samskrit Bharati (2006).
2. History of Science in India Volume-1, Part-I, Part-II, Volume VIII, by Sibaji Raha, et al. National Academy of Sciences, India and The Ramkrishan Mission Institute of Culture, Kolkata (2014).
3. India's Glorious Scientific Tradition by Suresh Soni, Ocean Books Pvt. Ltd. (2010).

# हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

## भाषा संकाय, हिन्दी विभाग, सेमेस्टर - प्रथम

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL - 453

पाठ्यक्रम का नाम : हिंदी का प्रशासनिक अनुप्रयोग

पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

श्रेयांक : 02 (बास्केट कोर्स)

# हिंदी का प्रशासनिक अनुप्रयोग

**पाठ्यक्रम का उद्देश्य:-**

- विभिन्न ज्ञान अनुशासनों में प्रशासनिक अनुप्रयोग का विकास करना।
- अनुवाद के माध्यम से अंग्रेजी पाठ्यक्रम की सामग्री को हिंदी में बदलना।
- अनुवाद को वर्तमान सांस्कृतिक, सामाजिक एवं प्रयोजनपरक प्रविधियों से जोड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष को विकसित करना।
- भारतीय एवं वैश्विक परिदृश्य में हिंदी को अनुवाद के माध्यम से सम्पन्न भाषा बनाना।
- प्रशासनिक अनुप्रयोग के प्रमुख उपकरण के रूप में विकसित करना।

**पाठ्यक्रम परिणाम:-**

- भारत में हिंदी की प्रशासनिक अनुप्रयोग की प्रक्रिया का परस्पर विचार-विमर्श।
- **(Word Sense Disambiguation in Machine Translation with Special Reference to Anusaaraka)**
- छात्रों की शैक्षणिक अभिरुचि तथा अधिगम क्षमता में वृद्धि करना।

**मूल्यांकन:-**

पाठ्यक्रम में दो स्तरों पर मूल्यांकन होगा :-

1. आंतरिक मूल्यांकन- 20 अंक, मध्यावधि मूल्यांकन 20 अंक, कुल = 40 अंक
2. सत्रांत मूल्यांकन- 60 अंक

छात्रों को मध्यावधि और संत्रात परीक्षा दोनों मिलाकर (50 प्रतिशत) अंक प्राप्त करने होंगे

**इकाई-1 हिन्दी भाषा : राजभाषा के विशेष सन्दर्भ में** (4 घंटे)

1. राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा
2. राजभाषा परिनियमावली ( राजभाषा संबंधी संवैधानिक उपबंध)
3. राजभाषा अधिनियम

**इकाई-2 प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध आयाम** (4 घंटे)

1. प्रयोजनमूलक हिंदी की संकल्पना
2. कार्यालयी हिंदी
3. वाणिज्य व्यापार की हिंदी
4. समाचार की हिंदी

**इकाई-3 अनुवाद : एक परिचय** (4 घंटे)

1. अनुवाद का स्वरूप एवं प्रकार
2. स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा
3. अनुवाद के गुण

**इकाई-4 टिप्पणी लेखन : सिद्धांत और व्यवहार** (4 घंटे)

1. सामान्य सिद्धांत
2. सहायक स्तर की टिप्पणी
3. अधिकारी स्तर की टिप्पणी

**इकाई-5 हिन्दी भाषा का अनुप्रयोग** (4 घंटे)

1. हिंदी वर्तनी का मानकीकरण
2. पारिभाषिक शब्द और उसका निर्माण
3. कम्प्यूटर साधित हिन्दी


07/12/22
डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
माचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
7/12/22
डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
-176215
7.12.22
(डॉ. प्रियाशर्मा)
14/12/2022

**सम्भावित ग्रन्थ :**

1. हिंदी सरंचना कौशल, डॉ. रामप्रकाश डॉ दिनेश कुमार गुप्त, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली I
2. हिंदी भाषा विविध आयाम, डॉ नीना अग्रवाल, डॉ आभा सक्सेना, सतीश बुक डिपो, नई दिल्ली I
3. हिंदी: प्रयोग, क्षमता और संप्रेषण, डॉ पूर्णचंद टंडन, डॉ हरीश कुमार सेठी, किताबघर, नई दिल्ली I
4. लेखन-शैली दक्षता, डॉ कमला कौशिक, डॉ नीरज भारद्वाज, सतीश बुक डिपो, नई दिल्ली I
5. विज्ञापन और हिंदी भाषा, डॉ नरेंद्र कुमार "संत," श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली I
6. हिंदी : तब और अब, डॉ स्नेह चड्ढा, डॉ शशि सरदाना, अमित कुमार, सतीश बुक डिपो, नई दिल्ली I
7. भाषा विविध पक्ष, डॉ मुकेश अग्रवाल, के. एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद।
8. अनुप्रयुक्त हिंदी, डॉ शशि सिंह, के. एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद।
9. राजभाषा हिन्दी,डॉ. भोला नाथ तिवारी
10. प्रयोजिनी हिन्दी, प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित
11. अनुवाद के सिद्धांत और प्रयोग, डॉ. भोलानाथ तिवारी
12. अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएं, डॉ. भोलानाथ तिवारी

**पाठ्यक्रम बोध रचना - 453 हिंदी का प्रशासनिक अनुप्रयोग**

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
-176215

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

भाषा संकाय, हिन्दी विभाग, सेमेस्टर-द्वितीय

**पाठ्यक्रम कूट संकेत** : HIL – 466

**पाठ्यक्रम का नाम : हिंदी भाषा एवं भाषाविज्ञान**

**पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति**

**श्रेयांक** : 04

# हिंदी भाषा एवं भाषाविज्ञान

## पाठ्यक्रम का उद्देश्य

1. हिंदी का स्वरूप और क्षेत्र का विस्तरित परिचय प्राप्त करना।
2. हिंदी भाषी समाज : हिंदी को जनपदीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भ की दृष्टि विकसित करना।
3. कोड परिवर्तन एवं कोड मिश्रण का परिचय देना ।
4. अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की दृष्टि विकसित करना।
5. भाषाविज्ञान की उपादेयता का परिचय देना ।

## पाठ्यक्रम परिणाम (co)

1. यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीक व्यवस्था और परस्पर विचार-विमर्श।
2. हिंदी को वर्तमान सांस्कृतिक, सामाजिक एवं प्रयोजनपरक प्रविधियों से जोड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष पर चर्चा करना ।
3. सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द की अभिक्षमता में वृद्धि।
4. छात्रों की शैक्षणिक अभिरुचि तथा आस्वादन क्षमता में वृद्धि।

## इकाई – 1 भाषा का सामान्य परिचय

भाषा की परिभाषा
भाषा के अभिलक्षण
भाषा परिवर्तन के कारण

## इकाई – 2 भाषा विज्ञान का परिचय

भाषा विज्ञान की परिभाषा
भाषा विज्ञान का स्वरूप
भाषा विज्ञान के अंग

## इकाई - 3 : भाषिक भूमंडलीकरण और हिंदी का व्यवहार क्षेत्र

भाषिक भूमंडलीकरण के संदर्भ में हिंदी
हिंदी का स्वरूप और क्षेत्र
हिंदी भाषी समाज : हिंदी का जनपदीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भ
संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा और विश्वभाषा
कोड परिवर्तन एवं कोड मिश्रण

07/12/22
डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हि. केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

चन्द्रकान्त सिंह
(हिंदी)
हि. केंद्रीय विश्वविद्यालय

7/12/22

07.12.22

14/12/2022

**इकाई - 4 : हिंदी की शैलियाँ :**

सामाजिक शैली : रूढ़िपरक, औपचारिक, सामान्य, अनौपचारिक और आत्मीय
संरचनात्मक शैली : संस्कृतनिष्ठ हिंदी, अरबी-फारसी मिश्रित हिंदी (उर्दू) सामान्य बोलचाल की हिंदी (हिंदुस्तानी) और अंग्रेजी मिश्रित हिंदी

**इकाई – 5 पारिभाषिक शब्दावली**

सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द
पारिभाषिक शब्दावली: अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं प्रकार।
पारिभाषिक शब्दावली के लक्षण।

**संदर्भ ग्रंथ**


1. हिंदी का भाषिक और सामाजिक परिदृश्य, कृष्ण कुमार गोस्वामी, साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली।
2. प्रयोजनमूलक हिंदी स्थिति संदर्भ और प्रयुक्ति विश्लेषण; आरसर्राजु .एस., हैदराबाद: मिलिंद प्रकाशन।
3. शैक्षिक व्याकरण और व्यावहारिक हिंदी; कृष्ण कुमार गोस्वामी, दिल्ली: आलेख प्रकाशन।
4. आलेख आधुनिक हिंदी : विविध आयाम - कृष्ण कुमार गोस्वामी, दिल्ली: आलेख प्रकाशन।
5. हिंदी भाषा का सामाजिक संदर्भ: रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और रमानाथ सहाय, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
6. हिंदी भाषा की सामाजिक भूमिका: भोलानाथ तिवारी, मुकुल प्रियदर्शनी, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास
7. हिंदी भाषा का समाजशास्त्र: रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
8. भाषाई अस्मिता और हिंदी : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव वाणी प्रकाशन, दिल्ली
10. उदय नारायण तिवारी, भाषाशास्त्र की रूपरेखा, भर्ती भंडार, इलाहाबाद
11. गोलोक बिहारी ढल, ध्वनि विज्ञान, बिहार ग्रंथ अकादमी, पटना
12. देवेंद्र नाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
13. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, हिंदुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद
14. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, भोलानाथ तिवारी और कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, आलेख प्रकाशन, दिल्ली


**पाठ्यक्रम बोध रचना - 466 हिंदी भाषा एवं भाषाविज्ञान**

07/12/22

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

7/12/22

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

7.12.22
(डॉ उषा शर्मा)

14/12/2022

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

भाषा संकाय, हिन्दी विभाग, सेमेस्टर-द्वितीय

**पाठ्यक्रम कूट संकेत** : HIL 470

**पाठ्यक्रम का नाम** : प्रयोजनमूलक हिंदी

**पाठ्यक्रम शिक्षक** : डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

**श्रेयांक** : 02

# प्रयोजनमूलक हिंदी

## पाठ्यक्रम का उद्देश्य

1. विभिन्न ज्ञान-अनुशासनों में हिंदी का विकास करना।
2. हिंदी को समझने, उसका आस्वादन करने तथा मूल्यांकन करने की दृष्टि विकसित करना।
3. हिंदी प्रवृत्तियों के संदर्भ में विभिन्न साहित्य विधाओं के विकास क्रम का परिचय देना।
4. प्रयोजनमूलक हिंदी का विविध दृष्टियों से विवेचन - विश्लेषण, आस्वादन तथा समीक्षा करने की दृष्टि देना।

## पाठ्यक्रम परिणाम (co)

1. जन संचार एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिंदी की उपादेयता तथा सूचना प्रौद्योगिकी के नए क्षेत्र में हिंदी की विकास यात्रा की जानकारी देकर उनमे अभिरुचि निर्माण।
2. हिंदी को वर्तमान सांस्कृतिक, सामाजिक एवं प्रयोजनपरक प्रवृत्तियों से जोड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष की ज्ञान प्राप्ति।
3. छात्रों की शैक्षणिक संबंधी अभिरुचि तथा आस्वादन क्षमता में वृद्धि।
4. भारतीय एवं वैश्विक परिदृश्य में खेल, उत्पादन, मनोरंजन उद्योग जैसे वृहद् क्षेत्रों मे विधि सलाहकारों और नियोजकों की उपादेयता।

## इकाई – 1 प्रयोजनमूलक हिंदी:अवधारणा और प्रासंगिकता

भाषा और समाज

साहित्यिक भाषा एवं प्रयोजनमूलक भाषा

प्रयोजनमूलक हिंदी का नामकरण

## इकाई – 2 कार्यालय/स्वरूप और क्षेत्र

निर्वैयक्तिता

तथ्यों में में संपूर्णता और स्पष्ट

यथासंभव असंदिग्धता

वर्णनात्मकता

## इकाई – 3 फाइल प्रबंधन पद्धति

फाइल

फाइल प्रबंधन पद्धति

कागजातों को फाइल करना

संदर्भ देना

डॉकेट करना

फाइल का संयोजन

04/12/22
डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

1/12/22

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

3.12.22

**इकाई – 4 मसौदा लेखन : सिद्धांत और व्यवहार**

सामान्य सिद्धांत
मसौदा लेखन संबंधी आवश्यक अनुदेश
आवेदन पत्र
कार्यालय आदेश
अधिसूचना
प्रेस विज्ञप्ति

**इकाई - 5 ई-ऑफिस/डिजिटलीकरण**

ई-ऑफिस
डिजिटलीकरण ढांचा
डिजिटलीकरण की प्रक्रिया
ई-ऑफिस में एकीकरण

**सहायक ग्रंथ**


- आर . सर्राजू : प्रयोजनमूलक हिंदी स्थिति संदर्भ और प्रयुक्ति विश्लेषण; हैदराबाद: मिलिंद प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, शैक्षिक व्याकरण और व्यावहारिक हिंदी; दिल्ली: आलेख प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिंदी; दिल्ली: कालिंगा प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, आलेख आधुनिक हिंदी विविध आयाम; दिल्ली: आलेख प्रकाशन।
- सु नागलक्ष्मी, प्रयोजनमूलक हिंदी प्रासंगिकता एवं परिदृश्य; मथुरा: कुंजबिहारी पचौरी प्रकाशन।
- प्रयोजनमूलक हिंदी : रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव (सम्पा.), केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
- राजभाषा हिंदी : कैलाशचन्द्र भाटिया
- सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग : गोपीनाथ श्रीवास्तव, लोकभारती, इलाहाबाद
- कार्यालय क्रिया विधि : चिरंजीलाल, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।
- पारिभाषिक शब्दावली और समस्याएँ : भोलानाथ तिवारी


**पाठ्यक्रम बोध रचना** HIL 470 – **प्रयोजनमूलक हिंदी**

07/12/22

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

7/12/22

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

7.12.22

14/12/2022

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Himachal Pradesh
(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)


## भाषा संकाय (हिंदी विभाग)

## स्नातकोत्तर (हिंदी) द्वितीय सेमेस्टर

**पाठ्यक्रम कूट :** HIL- 406 (क) श्रेयांक : 02

**पाठ्यक्रम शीर्षक :** पाश्चात्य काव्यशास्त्र

**पाठ्यक्रम शिक्षक :** डॉ. चंद्रकांत सिंह

**श्रेयांक** : 4 [ एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों / ट्युटोरियल / व्यावहारिक कार्य के घंटे 5 और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य , निर्धारित कार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पत्र लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के घंटे के समान है 15।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य:**

- पाश्चात्य काव्यशास्त्र पाठ्यक्रम पाश्चात्य साहित्यिक परंपरा पर आधारित है | इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य समूचे पाश्चात्य चिंतन को उद्घाटित करना है |
- पाश्चात्य साहित्य के विविध चिंतकों, उनके चिंतन के प्रमुख विचारबिन्दुओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य है |
- पाश्चात्य साहित्य-दर्शन से विकसित विभिन्न सम्प्रदायों एवं सिद्धांतों की सूक्ष्म चेतना से विद्यार्थियों को परिचित कराया जाएगा |

**पाठ्यक्रम परिणाम :**

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी पाश्चात्य साहित्य की समृद्धतम ज्ञान-धारा से परिचित हो सकेंगे |
- यह पाठ्यक्रम साहित्य को देखने-परखने की पाश्चात्य दृष्टि को विद्यार्थियों के समक्ष रखेगा और इसके माध्यम से विद्यार्थियों के भीतर साहित्य को विवेचित करने की प्रखर दृष्टि का विकास हो सकेगा |
- पाठ्यक्रम के द्वारा साहित्य के विविध घटकों की जानकारी विद्यार्थियों को मिल सकेगी |

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

- रचना की व्याख्या एवं आख्या की दृष्टि से विद्यार्थियों की समझ का विस्तार होगा | भारतीय दृष्टि के साथ-साथ पश्चिमी ज्ञान-बोध से भी विद्यार्थी लाभान्वित हो सकेंगे |

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75 % कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा : 20%
2. सत्रांत परीक्षा : 60%
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन: 20% (100 अंक में 20 अंक)

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु –**

**इकाई -1 पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत : एक परिचय** (04 घंटे)

- पश्चिम में साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
- पाश्चात्य साहित्य चिन्तन परम्परा का ऐतिहासिक विकास

**इकाई- 2 पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत – 1** (04 घंटे)

- प्लेटो : काव्य पर आरोप, अनुकृति सिद्धांत
- अरस्तु : अनुकृति एवं विरेचन सिद्धांत
- लौंजाइनस : उदात्त की अवधारणा

पाठ्यक्रम विषयवस्तु –

**इकाई- 3 पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत – 2** (04 घंटे)

- वर्ड्सवर्थ : काव्य-भाषा सिद्धांत
- कोलरिज : कल्पना सिद्धांत

**इकाई- 4 पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत – 3** (04 घंटे)

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

- टी.एस इलियट : परंपरा की अवधारणा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत
- आई. ए. रिचर्ड्स : मूल्य सिद्धांत, सम्प्रेषण सिद्धांत

**इकाई- 5 पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत – 4** (04 घंटे)

- शास्त्रीयतावाद, स्वच्छन्दतावाद, मार्क्सवाद
- नई समीक्षा, संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद, विखंडनवाद
- साहित्यिक शैली विज्ञान, उत्तर आधुनिकता

**संभावित सन्दर्भ ग्रंथ सूची –**


1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र — देवेन्द्रनाथ शर्मा
2. पाश्चात्य साहित्य चिन्तन — निर्मला जैन
3. संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद और प्राच्य काव्यशास्त्र — गोपीचंद नारंग
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास — डॉ. तारकनाथ बाली
5. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा — डॉ. रामचन्द्र तिवारी
6. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत — डॉ. गणपति चंद्र गुप्त
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – इतिहास, सिद्धांत और वाद — डॉ. भगीरथ मिश्र
8. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – अधुनातन संदर्भ — सत्यदेव मिश्र



डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

**हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय**

Central University of Himachal Pradesh

**(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)**

**भाषा संकाय (हिंदी विभाग)**

**स्नातकोत्तर (हिंदी) द्वितीय सेमेस्टर**

**पाठ्यक्रम कूट** : HIL- **408 (क)** श्रेयांक : 02

**पाठ्यक्रम शीर्षक** : निर्गुण भक्ति काव्य

**पाठ्यक्रम शिक्षक** : डॉ. चंद्रकांत सिंह

**श्रेयांक** : 4 [ एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों / ट्युटोरियल / व्यावहारिक कार्य के घंटे 5 और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य , निर्धारित कार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पत्र लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के घंटे के समान है 15।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य**:

- निर्गुण भक्ति काव्य पाठ्यक्रम के द्वारा भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा को समझा जाएगा |
- निर्गुण भक्ति की ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी दोनों ही काव्य-धाराओं का विवेचन अभीष्ट है |
- निर्गुण संतों के काव्य जगत, भक्ति पक्ष एवं दार्शनिक चेतना आदि पक्षों को उद्घाटित किया जायेगा जिससे कि विद्यार्थियों को समग्र जानकारी प्राप्त हो सके |
- प्रमुख निर्गुण संतों की रचनाओं का पाठ-विवेचन भी किया जाएगा जिससे कि रचना को देखने की आलोचकीय क्षमता का संवर्धन हो सके |

**पाठ्यक्रम परिणाम** :

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों को भक्ति-काव्य की निर्गुण धारा के संदर्भ में जानकारी मिल सकेगी |
- रचना के पाठ से विद्यार्थी निर्गुण काव्य की पारिभाषिक शब्दावलियों से परिचित हो सकेंगे |
- निराकार भक्ति, गुरु महिमा, ओंकार साधना, निरति साधना, अजपा समाधि जैसे विविध घटकों को विद्यार्थी आत्मसात कर सकेंगे |

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

- पदों की व्याख्या से विद्यार्थियों की ज्ञानात्मक संवेदना का निश्चय ही संवर्धन हो सकेगा |

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75 % कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा : 20%
2. सत्रांत परीक्षा : 60%
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन: 20% (100 अंक में 20 अंक)

**<u>पाठ्यक्रम विषयवस्तु –</u>**

**इकाई -1 निर्गुण भक्ति : एक परिचय** **(04 घंटे)**

- भक्ति : अवधारणा और स्वरूप
- निर्गुण भक्ति का स्वरूप
- निर्गुण भक्ति-धारा के प्रमुख रचनाकार

**इकाई- 2 कबीर** **(04 घंटे)**

- कबीर की भक्ति-भावना
- कबीर का दार्शनिक विचार
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण ( आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'कबीर' पुस्तक से –
  'मन मस्त हुआ तब क्यों बोले' (पद संख्या-33), 'बालम आओ हमारे गेह रे (पद संख्या-35),
  'अवधू मेरा मन मतिवारा' (पद संख्या-108)

**इकाई- 3 रैदास** **(04 घंटे)**

- रैदास की साधना-पद्धति
- रैदास का सामाजिक चिंतन

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण ( डॉ. शुकदेव सिंह द्वारा संपादित 'रैदास बानी' पुस्तक से – 'अब मेरी बूड़ी रे भाई' (पद संख्या-02), 'जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा' (पद संख्या-56), 'दरसन दीजै राम दरसन दीजै' (पद संख्या-94),

**इकाई- 4 रज्जब** **(04 घंटे)**

- भक्ति आंदोलन और संत रज्जब
- रज्जब का काव्य-कौशल
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण ( प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय द्वारा संपादित 'संत रज्जब' पुस्तक से –
  सवैया- 'साधु समागम होत हि पाइए' (पद संख्या-02), 'शरीर को नाश करै सु संयासी जु'(पद संख्या-04),

**इकाई- 5 मलिक मुहम्मद जायसी** **(04 घंटे)**

- जायसी का रहस्यवाद
- जायसी का ग्राम-बोध
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण ( आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा संपादित 'जायसी ग्रंथावली' पुस्तक से – 'मानसरोदक खण्ड'

**<u>संभावित सन्दर्भ ग्रंथ सूची –</u>**


1. निर्गुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका — डॉ. रामसजन पाण्डेय
2. हिंदी संत काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन — डॉ. वासुदेव सिंह
3. भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य — डॉ. शिव कुमार मिश्र
4. कबीर — आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. कबीर मीमांसा — डॉ. रामचंद्र तिवारी
6. रैदास बानी — डॉ. शुकदेव सिंह (संपादन)
7. संत रज्जब — डॉ. नन्द किशोर पाण्डेय
8. जायसी ग्रंथावली — आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (संपादन)
9. त्रिवेणी — आचार्य रामचंद्र शुक्ल


डॉ. ओमप्रकाश प्रसाद
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ.
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

**हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय**
Central University of Himachal Pradesh
**(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)**

**भाषा संकाय (हिंदी विभाग)**
**स्नातकोत्तर (हिंदी) द्वितीय सेमेस्टर**

**पाठ्यक्रम कूट** : HIL- 451 श्रेयांक : 02
**पाठ्यक्रम शीर्षक** : हिंदी गीत, नवगीत, ग़ज़ल
**पाठ्यक्रम शिक्षक** : डॉ. चंद्रकांत सिंह

**श्रेयांक** : 4 [ एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों / ट्युटोरियल / व्यावहारिक कार्य के घंटे 5 और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य , निर्धारित कार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पत्र लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के घंटे के समान है 15।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य**:

- यह एक अंतर्विषयी पाठ्यक्रम है जिसका अध्ययन हिंदी के इतर विद्यार्थी करेंगे इसलिए यह अत्यंत संक्षिप्त और सारगर्भित होगा | जिसका उद्देश्य हिंदी गीत, नवगीत और ग़ज़ल की परिचयात्मक जानकारी देना है |
- इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य हिंदी से इतर विद्यार्थियों के भीतर हिंदी के प्रति रूचि पैदा करना भी है जिससे कि साहित्य के प्रति आस्वादकता पैदा हो सके |
- गीत, नवगीत, ग़ज़ल के सैद्धांतिक पक्षों के साथ व्याख्यात्मक पक्ष पर भी बल दिया जाएगा जिससे कि विद्यार्थी इन विधाओं का समग्र अध्ययन कर सकें |

**पाठ्यक्रम परिणाम** :

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा सहृदयता का गुण विकसित होगा |
- इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों का संवेदनात्मक विकास होगा |
- रचना के पाठ से विद्यार्थी गीत, नवगीत, ग़ज़ल की आत्मा से परिचित हो सकेंगे |
- गीत, नवगीत, ग़ज़ल को आत्मसात करने और उनका आलोचनात्मक विश्लेषण करने में विद्यार्थी दक्ष होंगे |

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75 % कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा : 20%
2. सत्रांत परीक्षा : 60%
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन: 20% (100 अंक में 20 अंक)

**<u>पाठ्यक्रम विषयवस्तु –</u>**

**इकाई -1 गीत, नवगीत, ग़ज़ल : एक परिचय** (04 घंटे)

- गीत : प्रवृत्तियाँ और विकास
- नवगीत : प्रवृत्तियाँ और विकास
- ग़ज़ल : प्रवृत्तियाँ और विकास

**इकाई- 2 प्रमुख गीतकार एवं उनके चयनित गीतों का अध्ययन-1** (04 घंटे)

- गीति-कला की दृष्टि से मैथिलीशरण गुप्त, निराला एवं महादेवी वर्मा का अध्ययन
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण – 'तुम निरखो' (मैथिलीशरण गुप्त), 'स्नेह निर्झर बह गया है (निराला), मैं नीर भरी दुःख की बदली (महादेवी वर्मा),

**इकाई- 3 प्रमुख गीतकार एवं उनके चयनित गीतों का अध्ययन-2** (04 घंटे)

- गीति-कला की दृष्टि से हरिवंश राय बच्चन, रमानाथ अवस्थी एवं केदारनाथ सिंह का अध्ययन
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण – 'मुझे पुकार लो' (हरिवंश राय बच्चन), 'रात और शहनाई' (रमानाथ अवस्थी), 'दुपहरिया' (केदारनाथ सिंह)

**इकाई- 4 प्रमुख नवगीतकार एवं उनके चयनित नवगीतों का अध्ययन** (04 घंटे)

- नवगीति-कला की दृष्टि से धर्मवीर भारती, शंभुनाथ सिंह एवं उमाकांत मालवीय का अध्ययन

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण- 'धुंधली नदी में' (धर्मवीर भारती), 'समय की शिला पर' (शंभुनाथ सिंह), 'चुभन और दंश' (उमाकांत मालवीय)

**इकाई- 5 प्रमुख ग़ज़लकार एवं उनकी चयनित ग़ज़लों का अध्ययन** (04 घंटे)

- ग़ज़ल-कला की दृष्टि से शमशेरबहादुर सिंह, दुष्यंत कुमार एवं कुँवर बेचैन का अध्ययन
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण- 'वही उम्र का एक पल कोई लाए' (शमशेरबहादुर सिंह), 'कहाँ तो तय था चिरागाँ हर एक घर के लिए' (दुष्यंत कुमार), 'फूल को खार बनाने पे तुली है दुनिया' (कुँवर बेचैन)

**संभावित सन्दर्भ ग्रंथ सूची –**


1. श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन — कन्हैयालाल नंदन (भूमिका,चयन एवं संपादन)
2. निराला का गीत-काव्य — संध्या सिंह
3. शमशेरबहादुर सिंह संकलित कविताएँ — गोपेश्वर सिंह (चयन और भूमिका)
4. आधुनिक हिंदी गीतिकाव्य — डॉ. विश्वनाथ प्रसाद
5. नवगीत सप्तक — शंभुनाथ सिंह (संपादन)
6. नये गीत का उद्भव और विकास — रमेश रंजक



डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)

## हिंदी विभाग - भाषा संकाय

## स्नातकोत्तर द्वितीय सेमेस्टर (बास्केट कोर्स)

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : **एच.आई.एल. 409 क** श्रेयांक – **2**

पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिंदी साहित्य और सिनेमा**

पाठ्यक्रम शिक्षक : **डॉ प्रीति सिंह**

श्रेयांक : **2** [एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

**पाठ्यक्रम उद्देश्य :**

- हिंदी साहित्य और सिनेमा पाठ्यक्रम के अंतर्गत साहित्य और सिनेमा के अंत: संबंध से विद्यार्थियों को परिचित कराया जाएगा।
- पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थी सिनेमा की विषयवस्तु का अध्ययन करेंगे।
- साहित्य और सिनेमा में जीवन उपयोगी उपदेश देने की क्षमता होती है इसके अध्ययन से विद्यार्थियों में भी इस क्षमता का विकास होगा।
- पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी सिनेमा को मनोरंजन एवं संस्कृति के माध्ययम के रूप में जान सकेंगे।

**पाठ्यक्रम परिणाम :**

- इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी सिनेमा अपने समाज की विषम परिस्थितियों को सरलता से समझ सकेगें।
- विद्यार्थियों में साहित्य और सिनेमा को देखने का आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा।
- विद्यार्थी साहित्य और सिनेमा के उपादानों से परिचित होंगे।
- इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी किसी घटना के दृष्य को पटकथा के रूप में प्रस्तुत करने में समर्थ होंगे।

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जासकता है।

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा - 20
2. सत्रांत परीक्षा - 60
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन - 20

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु -**

**इकाई –1 साहित्य और सिनेमा : एक परिचय** (4 घंटे)

क) साहित्य: स्वरूप एवं अवधारणा
ख) सिनेमा: स्वरूप एवं संक्षिप्त परिचय
ग) सिनेमा के प्रकार (डॉक्यूमेंटरी फिल्म, टेली फिल्म, एनिमेशन, विज्ञापन)

**इकाई-2 हिन्दी सिनेमा के महत्वपूर्ण घटक** (4 घंटे)

क) सिनेमा मे अंतर्निहित तत्व
ख) कथा, पटकथा के मूल सिद्धांत
ग) हिंदी साहित्य और हिंदी सिनेमा का अंत: संबंध

**इकाई-3 हिंदी साहित्य और सिनेमा** (4 घंटे)

क) सिनेमाई जगत में हिंदी के साहित्यकार,
ख) सिनेमाई रूपांतरण के प्रमुख सिद्धांत
ग) हिन्दी साहित्य की रचनाओं का सिनेमाई रूपांतरण (संक्षिप्त परिचय)

**इकाई-4 हिंदी कहानी और सिनेमा** (4 घंटे)

क) रेणू की कहानी - मारे गये गुलफाम, सिनेमाई रूपांतरण 'तीसरी कसम' का अध्ययन

ख) मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' सिनेमाई रूपांतरण 'रजनी गंधा' का अध्ययन

ग) कमलेश्वर की कहानी 'आँधी' सिनेमाई रूपांतरण 'मौसम' का अध्ययन

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

**इकाई-5 समकालीन हिंदी सिनेमा बदलते संदर्भ** (4 घंटे)

क) समकालीन हिंदी साहित्य और सिनेमा का विश्लेषण और मूल्यांकन

ख) समकालीन हिंदी सिनेमा का महत्व

ग) स्वरचित कथा, पटकथा व रचनाओं की प्रस्तुति

**संभावित संदर्भ ग्रन्थ सूची :**


1. हिंदी सिनेमा का इतिहास - मनमोहन चड्ढा
2. भारतीय सिनेमा एक अनंत यात्रा - प्रसून सिन्हा
3. सिनेमाई भाषा और हिंदी संवादों का विश्लेषण - वासवानी किशोर
4. सिनेमा और संस्कृति - राही मासूम रजा
5. कथा पटकथा - मन्नू भंडारी
6. मारे गए गुलफाम - फणीश्वर नाथ रेणु
7. यही सच है - मन्नू भंडारी
8. आंधी - कमलेश्वर



डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्
धर्मशाला-176215

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)

## हिंदी विभाग - भाषा संकाय

## स्नातकोत्तर द्वितीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : **एच.आई.एल. 441** श्रेयांक – **4**

पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिंदी साहित्य का इतिहास: आधुनिक काल**

पाठ्यक्रम शिक्षक : **डॉ प्रीति सिंह**

श्रेयांक : **4** [एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

**पाठ्यक्रम उद्देश्य :**

- पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी हिंदी साहित्य के आधुनिक काल से परिचित होंगे ।
- पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थी साहित्य इतिहास के जीवन्त तथा शाश्वत तत्व के संग्रहण की क्षमता से पूर्ण होंगे ।
- पाठ्यक्रम द्वारा छात्र नवजागरण एवं उसका साहित्य पर प्रभाव से परिचित होंगे ।
- छात्रों को आधुनिक काल की प्रवृत्तियों से परिचित कराना पाठ्यक्रम का उद्देश्य होगा ।

**पाठ्यक्रम परिणाम :**

- साहित्यिक इतिहास के अध्ययन से विद्यार्थियों की ऐतिहासिक अंतर दृष्टि का परिवर्धन करेंगे ।
- आधुनिक काल तर्क, वैज्ञानिकता एवं विधेय पर आधारित काल है, प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों की विधेय वादी दृष्टि विकसित करेंगे ।
- साहित्य और इतिहास के अंत: संबंधों की समझ के साथ विद्यार्थी जागरूक अध्येता बन सकेगें ।
- पाठ्यक्रम अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों की आलोचनात्मक क्षमता का विकास करेंगे ।

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
-176215

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जासकता है।

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा - 40
2. सत्रांत परीक्षा - 120
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन - 40

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु -**

**इकाई –1 आधुनिक काल** (8 घंटे)

क) आधुनिक काल की अवधारणा
ख) आधुनिक काल: युगीन पृष्ठभूमि और परिवेश
ग) हिन्दी नवजागरण, जागरण सुधारकाल, खड़ी बोली का उदय

**इकाई-2 भारतेन्दु युग एवं द्विवेदी युग** (8 घंटे)

क) भारतेन्दु युग: प्रमुख प्रवृत्तियाँ और रचनाकार
ख) द्विवेदी युगीन कविता: खड़ी बोली का विकास
ग) द्विवेदी युग: प्रमुख प्रवृत्तियाँ और रचनाकार

**इकाई-3 छायावाद और प्रगतिवाद** (8 घंटे)

क) छायावाद: उदय की पृष्ठभूमि
ख) छायावाद: प्रमुख प्रवृत्तियाँ और रचनाकार
ग) प्रगतिवाद: काव्य की प्रवृत्तियाँ और रचनाकार

**इकाई-4 प्रयोगवाद, नयी कविता, समकालीन कविता** (8 घंटे)

क) प्रयोगवाद: प्रमुख प्रवृत्तियाँ और रचनाकार
ख) नयी कविता: प्रमुख प्रवृत्तियाँ और रचनाकार
ग) समकालीन हिंदी कविता: प्रवृत्तियाँ और रचनाकार

**इकाई-5 हिंदी गद्य की विधाएं** (8 घंटे)

क) कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी का परिचय
ख) निबंध, आलोचना, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा का परिचय
ग) हिंदी साहित्यिक पत्रिकाओं का परिचय

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. [illegible] सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
[illegible]-176215

## संभावित संदर्भ ग्रन्थ सूची :


1. हिंदी साहित्य का इतिहास - रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास - संपादक डॉ.नगेंद्र,
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल - हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. हिंदी साहित्य:उद्भव और विकास - हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. हिंदी साहित्य की भूमिका - हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. साहित्य और इतिहास दृष्टि - मैनेजर पांडेय
7. साहित्य का इतिहास दर्शन - नलिन विलोचन शर्मा
8. हिंदी साहित्य का अतीत - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
9. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
10. हिंदी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास - डॉ.भगीरथ मिश्र
11. हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास - नंददुलारे वाजपेई
12. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - रामकुमार वर्मा
13. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण - रामविलास शर्मा
14. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - बच्चन सिंह
15. हिंदी का गद्य साहित्य - डॉ रामचंद्र तिवारी



डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Himachal Pradesh
(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)


## भाषा संकाय (हिंदी विभाग)

## स्नातकोत्तर (हिंदी) द्वितीय सेमेस्टर

**पाठ्यक्रम कूट** : HIL- IKS-HINDI-01 **श्रेयांक** : 02

**पाठ्यक्रम शीर्षक** : हिंदी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा

**पाठ्यक्रम शिक्षक** : डॉ0 प्रिया शर्मा

**श्रेयांक : 2** (एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / व्यावहारिक / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ कार्य के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतंत्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित कार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पर लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के समान है।

**पाठ्यक्रम उद्देश्यः**

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार गुरुकुल शिक्षा–पद्धति का प्रचार–प्रसार करना।
- छात्रों को भारतीय ज्ञान परंपरा के बुनियादी ज्ञान से परिचित करवाना।
- प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान की समृद्ध परंपरा को विकसित करना।
- भारतीय ज्ञान, जीवन, दर्शन एवं भाषाओं को महत्ता प्रदान करना।
- भारतीय संस्कृति एवं कला के साथ उसकी समस्त व्यावहारिक विधाओं से अवगत कराना।

**पाठ्यक्रम परिणामः**

- भारत की प्राचीन ज्ञान–परंपरा का आत्मसातीकरण।
- भारतीय संस्कृति को समझकर ज्ञान–विज्ञान, कर्म–धर्म आदि में भारतीय चिंतन का विकास।
- धर्म आधारित मानवीय मूल्यों का संवर्धन।
- छात्रों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति से पोषित भारतीय ज्ञान–परंपरा का बोध।

(डॉ0 प्रिया शर्मा) 22/01/23

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

**उपस्थिति अनिवार्यता:**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड:**

1. मध्यावधि परीक्षा – 20%
2. सत्रांत परीक्षा – 60%
3. सतत आंतरिक मूल्यांकन – 20%

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु:**

**इकाई – 1 भारतीय ज्ञान परंपरा : अवधारणा एवं स्वरूप** **(04 घंटे)**

- भारतीय ज्ञान–परंपरा : एक परिचय (सिंधु घाटी सभ्यता, वैदिक संस्कृति, महाजनपद काल)
- भारतीय संस्कृति के नियामक तत्व (लोक धर्म, लोकाचार, लोकोत्सव)
- भारतीय ज्ञान परंपरा की विभिन्न धाराएँ (वेद–उपनिषद, दर्शन आदि)

**इकाई – 2 हिंदी की आदिकालीन ज्ञान–परंपरा** **(04 घंटे)**

- सिद्ध–नाथ साहित्य : एक वैशिष्ट्य
- जैन चरित काव्य : एक वैशिष्ट्य
- विद्यापति की भक्ति भावना
- अमीर खुसरो का लोकतत्त्व
- व्याख्या एवं समीक्षा –
  1. नंदक नंदक कदंबक तरु–तर धीरे–धीरे मुरली बजाय।
  2. देखि–देखि राधा रूप अपार
  3. मेरा जोबना भयो गुलाल
  4. अम्मा मेरे बाबा को भेजे री कि सावन आया

**इकाई – 3 हिंदी की भक्तिकालीन ज्ञान–परंपरा** **(04 घंटे)**

- कबीर का समाज–दर्शन

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

- तुलसी का लोकमंगल
- सूर की भक्ति भावना
- व्याख्या एवं समीक्षा –
  1. संतो देखत जग बौराना
  2. हम तो एक करि जांनानं जांनां (कबीर ग्रंथावली)
  3. श्रीराम चंद्र कृपालु भजुमन (विनय पत्रिका)
  4. सोभित कर नवनीत लिए
  5. हरि अपनैं आंगन कछु गावत (रचनाकार सूरदास)

**इकाई – 4 हिंदी की रीतिकालीन ज्ञान–परंपरा** **(04 घंटे)**

- बिहारी का लोकाचार
- गुरु गोविंद सिंह का जीवन–दर्शन
- भूषण का राष्ट्रीय बोध
- व्याख्या एवं समीक्षा –
  1. सनि–कज्जल चख–झख–लगन उपज्यौ सुदिन सनेहु
  2. मंगल बिंदु सुरंग, मुखु ससि, केसरि आड़ गुरु (बिहारी रत्नाकर जगन्नाथ दास रत्नाकर द्वारा संपादित)
  3. इंद्र जिमि जंभ पर.....
  4. तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर (भूषण ग्रंथावली)

**इकाई – 5 हिंदी की आधुनिक ज्ञान–परंपरा** **(04 घंटे)**

- निराला और वेदांत दर्शन
- दिनकर का कामाध्यात्म
- प्रेमचंद और ग्रामीण समाज
- व्याख्या एवं समीक्षा –
  1. धूलि में तुम मुझे भर दो
  2. मैं बैठा था पथ पर (अणिमा, निराला)
  3. जब से हम–तुम मिले, न जाने, कितने अभिसारों में

डॉ. [illegible] सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

4. पर मैं बाधक नहीं, जहाँ भी रहो, भूमि या नभ में (उर्वशी तृतीय अंक, रामधारी सिंह दिनकर)

**संभावित ग्रंथ सूचीः**

**आधार ग्रंथ**


| | |
|---|---|
| 1. ऋग्वेद में दार्शनिक तत्व | गणेश दत्त शर्मा, विमल प्रकाशन, गाज़ियाबाद |
| 2. बिहारी रत्नाकर, जगन्नाथ रत्नाकर | लोकभारती, इलाहाबाद |
| 3. अणिमा | सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' |
| 4. हिंदी साहित्य का इतिहास | आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली |
| 5. प्रेमचंद की आदर्शवादी कहानियाँ | मुंशी प्रेमचंद |
| 6. हिंदू संस्कार | राजबली पाण्डेय, चौखंबा विद्या भवन, वाराणसी |
| 7. भारतीय संस्कृति | शिवदत्त ज्ञानी, राजकमल, दिल्ली |
| 8. भूषण ग्रंथावली | विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली |
| 9. संस्कृति का दार्शनिक विवेचन | देवराज, प्रकाशन ब्यूरो, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश |
| 10. योगदर्शन | पतंजलि, गीता प्रैस, गोरखपुर |
| 11. उत्तरी भारत की संत परंपरा | परशुराम चतुर्वेदी, लीडर प्रैस, इलाहाबाद |
| 12. भाषा साहित्य एवं संस्कृति | (सं.) विमलेश कांति वर्मा, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली |
| 13. भारतीय संस्कृति के मूल तत्व | शिवदास, राष्ट्रीय हिंदी साहित्य परिषद्, नई दिल्ली |
| 14. परंपरा का पुनराख्यान (2012) चिंतनपरक निबंध संग्रह | श्रीराम परिहार |
| 15. लोक की ज्ञान परंपरा (2017) लोक साहित्य | श्रीराम परिहार |


**संदर्भ ग्रंथ**


| | |
|---|---|
| 16. आधुनिक युग में धर्म | राधाकृष्ण, राजकमल, दिल्ली |
| 17. भारतीय दर्शन | बलदेव उपाध्याय, शारदा मंदिर, वाराणसी |
| 18. भारतीय दर्शन (दूसरा भाग) | राधाकृष्ण (अनु. नंदकिशोर विद्यालंकार) राजपाल एंड संस |
| 19. द हिंदू व्यू ऑफ लाइफ़ | राधाकृष्ण, जॉर्ज एलेन एंड एनविन, लंदन |
| 20. हम और हमारी सांस्कृतिक पहचान | राकेश भारतीय, राष्ट्रीय हिंदी साहित्य परिषद्, नई दिल्ली |
| 21. लोक संस्कृति : अवधारणा और तत्व | डॉ. परशुराम शुक्ल विरही, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी |


(डॉ. शिव शर्मा)

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
हिंदी विभाग
विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
विश्वविद्यालय

22. हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध — (संपादक) दयानिधि मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)

भाषा संकाय (हिंदी विभाग)

स्नातकोत्तर (हिंदी) द्वितीय सेमेस्टर

**पाठ्यक्रम कूट :** HIL-407 **श्रेयांक :** 02

**पाठ्यक्रम शीर्षक :** सगुण भक्ति काव्य

**पाठ्यक्रम शिक्षक :** डॉ0 प्रिया शर्मा

**श्रेयांक : 2** (एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला/व्यावहारिक/ट्युटोरियल/शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ कार्य के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतंत्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित कार्य/वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पर लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के समान है।

**पाठ्यक्रम उद्देश्यः**

- सगुण भक्ति काव्य धारा का परिचय देना और उसका गहन अध्ययन करना।
- सगुण भक्ति धारा के भक्त कवियों से परिचय कराकर छात्रों में सृजनधर्मिता उत्पन्न करना।
- यह पाठ्यक्रम व्यक्तिगत नहीं, समष्टिगत भावना से ओत–प्रोत है जिससे स्नातकोत्तर के छात्रों को एक नई दिशा मिलेगी।

**पाठ्यक्रम परिणामः**

- 'सगुण भक्ति काव्य' पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों के स्वयं का आत्मनिर्माण और आत्म विकास होगा।
- भक्ति में निहित श्रद्धा और प्रेम को जीवन का लक्ष्य मानकर छात्र मानसिक स्वास्थ्य के लाभ को प्राप्त कर पारमार्थिक सिद्धि और लौकिक उत्कर्ष को प्राप्त कर सकेंगे।
- इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों का आत्मांकन, आत्मपरिष्कार तथा आत्मोन्नति होगी।
- सगुण भक्ति की स्वानुभूति, रागात्मकता आदि से निर्दिष्ट अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी।

डॉ. सोमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

**उपस्थिति अनिवार्यता:**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्रों का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्रों को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड:**

1. मध्यावधि परीक्षा – 20%
2. सत्रांत परीक्षा – 60%
3. सतत आंतरिक मूल्यांकन – 20%

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु:**

**इकाई – 1 भक्ति : परिभाषा और स्वरूप** **(04 घंटे)**

- भक्ति : व्युत्पत्ति एवं स्वरूप
- भक्ति : उद्‌भव और विकास
- नवधा भक्ति के स्वरूप

**इकाई – 2 सगुण भक्ति काव्य धारा : एक परिचय** **(04 घंटे)**

- सगुण भक्ति : अर्थ एवं स्वरूप
- तुलसी का लोकमंगल
- गोचारण की संस्कृति और सूर का काव्य
- मीराबाई की माधुर्य भावना

**इकाई – 3 तुलसीदास** **(04 घंटे)**

- रामचरितमानस के उत्तरकांड की विशेषता
- व्याख्या एवं समीक्षा – उत्तरकांड (गोस्वामी तुलसीदास)
  आरंभिक दस दोहे और चौपाईयाँ

**इकाई – 4 सगुण भक्ति काव्य के प्रमुख कवि सूरदास** **(04 घंटे)**

- कृष्ण काव्य परंपरा में सूरदास

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
हिंदी विभाग

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

- भ्रमरगीत परंपरा और सूरदास
- सूरदास की भक्ति भावना
- व्याख्या एवं समीक्षा –

  1. सूरदास के पद
  2. बूझत स्याम कौन तू गोरी?
  3. निस दिन बरसत नैन हमारे
  4. मेरो अनत कहाँ सुखु पावै
  5. खेलन अब मेरी जात बलैया
  6. अखियाँ हरि दरसन की भूखी
  7. उधौ ब्रज की दसा बिचारो

     (सूर काव्य सागर–सार, कृष्णदेव शर्मा)

**इकाई – 5 सगुण भक्ति काव्य की प्रमुख कवयित्री मीराबाई (04 घंटे)**

- कृष्ण काव्य परंपरा में मीराबाई
- मीरा के काव्य में स्त्री चेतना
- व्याख्या एवं समीक्षा –

  1. म्हारो गोकुल रो ब्रजवासी
  2. म्हारां री गिरधर गोपाल
  3. मैं गिरधर के घर जाऊँ
  4. झूठा माणिक मोतिया री (मीरा का काव्य : विश्वनाथ त्रिपाठी)

**संभावित ग्रंथ सूचीः**

**आधार ग्रंथ**


| | |
|---|---|
| 1. रामचरित मानस उत्तर कांड | गोस्वामी तुलसीदास |
| 2. विद्यापति की पदावली | संपादन, नरेन्द्र झा |
| 3. सूर काव्य सागर–सार | कृष्णदेव शर्मा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली |
| 4. मीरा का काव्य | विश्वनाथ त्रिपाठी |
| 5. हिंदी काव्य में भक्ति का स्वरूप | नित्यानंद शर्मा, आशा प्रकाशन गृह, दिल्ली |




...प्रजापति

डॉ. च... सिंह

प्रभारी (हिंदी)

| | |
|---|---|
| 6. सूरसागर में लोकजीवन | हरगुलाल, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली |
| 7. हिंदी रामकाव्य और विष्णुदास की रामायण कथा | डॉ. मोहनसिंह तोमर, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली |
| 8. लोककवि तुलसीदास | विश्वनाथ त्रिपाठी, राधा कृष्णन प्रकाशन, दिल्ली |
| 9. मध्ययुगीन वैष्णव संस्कृति और तुलसीदास | रामरत्न भटनागर, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली |
| 10. मध्ययुग के भक्ति काव्य में माया | नंदकिशोर तिवारी, शोध साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद |
| 11. भक्ति का विकास | मुंशीराम शर्मा, चौखंबा विद्या भवन, वाराणसी |
| 12. भक्ति चिंतन की भूमिका | प्रेमशंकर, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद |
| 13. गोस्वामी तुलसीदास | आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी |
| 14. उत्तर मध्यकालीन हिंदी काव्य में भक्ति का स्वरूप | नित्यानंद शर्मा, आशा प्रकाशन गृह, दिल्ली |
| 15. मध्यकालीन कृष्ण काव्य में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति | भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली |


**सन्दर्भ ग्रंथ**


| | |
|---|---|
| 16. वैष्णव धर्म का उद्भव और विकास | सुवीरा जायसवाल, भारतीय अनुसंधान विकास परिषद्, कलकत्ता |
| 17. भक्तियोग का तत्व | जयदयाल गोयंदका, गीता प्रेस, गोरखपुर |
| 18. उत्तरी भारत की संत परंपरा | परशुराम चतुर्वेदी, लीडर प्रेस, इलाहाबाद |
| 19. मीरा माधुरी | ब्रजरत्न दास, हिंदी साहित्य कुटीर, वाराणसी |
| 20. मध्यकालीन रोमांस | मैथिली प्रसाद भारद्वाज, रिसर्च, दिल्ली |


डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)

## भाषा संकाय (हिंदी विभाग)

## स्नातकोत्तर (हिंदी) द्वितीय सेमेस्टर

**पाठ्यक्रम कूट :** HIL-485 **श्रेयांक :** 02

**पाठ्यक्रम शीर्षक :** अरबी–फ़ारसी से अनूदित हिंदी साहित्य

**पाठ्यक्रम शिक्षक :** डॉ0 प्रिया शर्मा

**श्रेयांक : 2** (एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला/व्यावहारिक/ट्युटोरियल/शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ कार्य के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतंत्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित कार्य/वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पर लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के समान है।

**पाठ्यक्रम उद्देश्यः**

- अरबी फ़ारसी भाषाओं में लिखित अनूदित हिंदी साहित्य स्नातकोत्तर हिंदी के विद्यार्थियों के लिए मानव जीवन से संबंधित सुखद एवं दुःखद किंतु मर्मस्पर्शी घटनाओं को निश्चित तारतम्य के साथ चित्रित करता है।
- अनूदित साहित्य एक महत्वपूर्ण कला है, शिल्प है और विज्ञान भी है जो दो या दो से अधिक भाषाओं के बीच होता है।
- भारतीय भाषाओं में 'विविधता में एकता' की भावना को बढ़ाने के लिए अनुवाद के माध्यम से अन्य भाषाओं के साहित्य को भाषांतर या रूपांतर या अनुवाद करवाने के प्रयास में भारत सरकार ने अपना महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है।

**पाठ्यक्रम परिणामः इस पत्र को पढ़ने के उपरांत विद्यार्थी**

- सप्त सिन्धु क्षेत्र में अरबी–फ़ारसी लिपि का विस्तार और प्रभाव का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- अरबी–फ़ारसी लिपि में लिखित हिन्दी साहित्य के प्रमुख साहित्यकार और उनके साहित्य के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर सकेंगे।

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
प्रोफेसर, हिंदी विभाग

- अरबी–फ़ारसी लिपि में लिखित हिन्दी काव्य की राष्ट्रीय विचारधारा का विश्लेषणपरक मूल्यांकन कर सकेंगे।
- अरबी–फ़ारसी लिपि में लिखित हिन्दी की प्रसिद्ध कहानियों का साहित्यिक अनुशीलन कर सकेंगे।

**उपस्थिति अनिवार्यता:**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्रों का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्रों को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड:**

1. मध्यावधि परीक्षा – 20%
2. सत्रांत परीक्षा – 60%
3. सतत आंतरिक मूल्यांकन – 20%

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु:**

**इकाई – 1 सप्त सिन्धु क्षेत्र में अरबी–फ़ारसी लिपि का विस्तार और प्रभाव (04 घंटे)**

- भाषा और लिपि का अर्न्तसंबंध
- अरबी–फ़ारसी लिपि का उद्‌गम और उसका सप्त सिन्धु क्षेत्र में प्रसार
- सप्त सिन्धु क्षेत्र की भाषाओं पश्तों, बलूची, पंजाबी, हिन्दी कश्मीरी बलती इत्यादि के लिए अरबी–फ़ारसी लिपि का प्रयोग
- मुगल काल में हिन्दी भाषा को अरबी–फ़ारसी लिपि में लिखने का प्रचलन और उसका प्रभाव

**इकाई – 2 अरबी–फ़ारसी लिपि में लिखित हिन्दी साहित्य के प्रमुख साहित्यकार और उनका साहित्य (04 घंटे)**

- मीर तकी मीर

  (क) साहित्यिक परिचय

  (ख) व्याख्या एवं समीक्षा – गज़ल संख्या 1,21,26,32,41,46,55,60,70,74,83

  (मीर तकी मीर, प्रतिनिधि रचना)

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

- मिर्ज़ा असदउल्ला ख़ाँ 'ग़ालिब'
  - (क) साहित्यिक परिचय – (प्रतिनिधि रचना)
  - (ख) व्याख्या एवं समीक्षा – शेयर संख्या, प्रथम 10

    मिर्ज़ा ग़ालिब एक सवानेही मंज़रनामा,

    डायरैक्टर क़ौमी कौंसिल बरा–ए फ़रोग–ए उर्दू ज़बान, नई दिल्ली

- रघुपति सहाय फ़िराक 'गोरखपुरी'
  - (क) साहित्यिक परिचय
  - (ख) व्याख्या एवं समीक्षा – गजल संख्या 1 से 10

    (रघुपति सहाय फ़िराक 'गोरखपुरी' प्रतिनिधि रचना)

**इकाई – 3 अरबी–फ़ारसी लिपि में लिखित हिंदी काव्य की राष्ट्रीय विचारधारा (04 घंटे)**

- नज़ीर अकबराबादी
  - (क) साहित्यिक परिचय
  - (ख) व्याख्या एवं समीक्षा –

    शायरी / नज़्में (कविताएँ)

    आदमीनामा, रोटियां, होली, जाड़ें की बहारें, बालपन – बांसुरी बजैया का, राखी

    (नज़ीर अकबराबादी प्रतिनिधि रचना)

- बहादुरशाह जफ़र
  - (क) साहित्यिक परिचय
  - (ख) व्याख्या एवं समीक्षा –

    गज़लें – नहीं जाता किसी से वो गरज़ जो, जहां पहले थे अब वो मकां,

    हमदमों से पूछना हर दम मिरा, कर गई वीरां चमन बादे–सबा

    (बहादुरशाह जफ़र प्रतिनिधि रचना)

- साहिर लुधियानवी
  - (क) साहित्यिक परिचय
  - (ख) व्याख्या एवं समीक्षा –

    गज़लें – रहने को घर नहीं है सारा जहाँ हमारा, न हिंदू बनेगा न मुसलमान बनेगा,

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति हिंदी विभाग

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह प्रभारी (हिंदी)

हमने सुनाया एक है भारत, औरत ने जनम दिया मर्दों को
(साहिर लुधियानवी, प्रतिनिधि रचना)

**इकाई – 4** **(04 घंटे)**

- मोहम्मद इकबाल
  (क) साहित्यिक परिचय
  (ख) व्याख्या एवं समीक्षा –
  शायरी / गज़ल – सारे जहाँ से अच्छा, खुदा बंदे से खुद पूछे, हज़ारों साल नर्गिस,
  ढूंढ़ता फिरता हूँ मैं इकबाल, नशा पिला के गिराना
  (मो0 इकबाल प्रतिनिधि रचना)
- फिराक़ गोरखपुरी
  (क) राष्ट्रवादी कवि और समालोचक
  (ख) हिंदी, उर्दू, हिंदुस्तानी : एक परिचय

**इकाई – 5** **(04 घंटे)**

- प्रेमचंद
  (क) साहित्यिक परिचय
  (ख) कहानी – ईदगाह
- इस्मत चुग़ताई
  (क) साहित्यिक परिचय
  (ख) कहानी 'हिंदुस्तान छोड़ दो'

**संदर्भ ग्रंथ सूची:**


1. उर्दू साहित्य का देवनागरी में लिपिकरण डॉ. वागीश शुक्ल
2. उर्दू साहित्य का इतिहास डॉ. सभापति मिश्र
3. उर्दू साहित्य की परम्परा डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा
4. साहिर लुधियानवी (संपादक) प्रकाश पंडित, राजपाल एंड सन्ज़, नई दिल्ली
5. उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास एहतेशाम हुसैन
6. उर्दू के प्रतिनिधि शायर और उनकी शायरी प्रो0 अनूप वशिष्ठ


डॉ. चन्द्रकान्त सिंह

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

| | |
|---|---|
| 7. प्रतिनिधि कहानियाँ | इस्मत चुग़ताई |
| 8. उर्दू पर खुलता दरीचा | डॉ. गोपीचंद नारंग |
| 9. उपन्यास की संरचना | गोपाल राय |
| 10. उमरावजान | मिर्ज़ा हादी रुसवा |
| 11. इंतिखाबे कलाम | फ़िराक गोरखपुरी, लिप्यंतरण–हैदर जाफ़री सैयद |
| | साहित्य अकादमी, नई दिल्ली |
| 12. मीर तकी मीर | (संपादक) प्रकाश पंडित, राजपाल एंड सन्ज़, दिल्ली |
| 13. उर्दू पर खुलता दरीचा | गोपीचंद नारंग, वाणी प्रकाशन, दिल्ली |
| 14. मिर्ज़ा ग़ालिब एक सवानेही मंज़रनामा | गुलज़ार, डायरैक्टर क़ौमी कौंसिल बरा–ए फ़रोग–ए |
| | उर्दू ज़बान |

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

**हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय**

Central University of Himachal Pradesh

**(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)**

**भाषा संकाय (हिंदी विभाग)**

**स्नातकोत्तर (हिंदी) तृतीय सेमेस्टर**

**पाठ्यक्रम कूट** : HIL- 411 (क) श्रेयांक : 04

**पाठ्यक्रम शीर्षक** : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

**पाठ्यक्रम शिक्षक** : डॉ. चंद्रकांत सिंह

**श्रेयांक** : 4 [ एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों / ट्युटोरियल / व्यावहारिक कार्य के घंटे 5 और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य , निर्धारित कार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पत्र लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के घंटे के समान है 15।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य**:

- उक्त पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को आदिकाल, भक्तिकाल एवं रीतिकाल के प्रतिनिधि कवियों एवं उनकी कविता से परिचित कराना है |
- प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य नामक पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थी हिंदी कविता की आदिधारा के प्रति विद्यार्थियों की रूचि पैदा करना है |
- तत्कालीन साहित्य और इतिहास के अन्तः सम्बन्ध के प्रति विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान करना उक्त पाठ्यक्रम का उद्देश्य है |

**पाठ्यक्रम परिणाम** :

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों को आदिकाल, भक्तिकाल एवं रीतिकाल की सम्यक जानकारी मिल सकेगी |
- आदिकाल, भक्तिकाल एवं रीतिकाल की मूल प्रवृत्तियों एवं प्रतिनिधि रचनाकारों के संदर्भ में विद्यार्थी समझ प्राप्त कर सकेंगे |
- रचना के पाठ की गहन व्याख्या से विद्यार्थियों में काव्य- पाठ की अंतर्दृष्टि का विकास होगा |
- प्रतिनिधि कवियों के संदर्भ में प्रामाणिक जानकारी द्वारा विद्यार्थियों का संवेदनात्मक विकास होगा |

**उपस्थिति अनिवार्यता** :

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75 % कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा : 40
2. सत्रांत परीक्षा : 120
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन: 40

**<u>पाठ्यक्रम विषयवस्तु –</u>**

**इकाई -1 आदिकालीन काव्य** **(08 घंटे)**

- पृथ्वीराज रासो का काव्य-सौन्दर्य, विद्यापति की श्रृंगार भावना एवं प्रकृति-चित्रण
- व्याख्या एवं समीक्षा- 'पृथ्वीराज रासो (रेवा तट)
- व्याख्या एवं समीक्षा- 'विद्यापति पदावली के आरम्भिक पाँच पद (संपादन-डॉ. नरेंद्र झा)

**इकाई- 2 भक्तिकालीन काव्य - 1** **(08 घंटे)**

- कबीर का समाज दर्शन, जायसी की प्रेम भावना
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण ( आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'कबीर' पुस्तक से –
  (पद संख्या-161- 165 तक)
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण- (आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा संपादित 'जायसी ग्रंथावली' पुस्तक से – 'नागमती वियोग खण्ड')

**इकाई- 3 भक्तिकालीन काव्य- 2** **(08 घंटे)**

- तुलसी की समन्वय चेतना, मीरा के काव्य में स्त्री स्वर, सूर का वात्सल्य वर्णन
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण- ( तुलसी द्वारा रचित रामचरितमानस का 'सुंदर काण्ड (गीताप्रेस) आरंभिक दस दोहे और चौपाईयाँ
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण- (विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा संपादित 'मीरा का काव्य' पुस्तक से- आरंभिक पाँच पद )
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण- (आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा संपादित 'भ्रमर गीत सार' पुस्तक से – पद संख्या 26-30)

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह

**इकाई**- 4 **रीतिकाल**-1 (08 **घंटे**)

- प्रमुख प्रवृत्तियाँ : रीतिबद्ध, रीति सिद्ध काव्य
- बिहारी का सौन्दर्य-चित्रण
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण- जगन्नाथ दास रत्नाकर द्वारा संपादित 'बिहारी सतसई' पुस्तक से आरंभिक 15 दोहे

**इकाई**- 5 **रीतिकाल**-2 (08 **घंटे**)

- प्रमुख प्रवृत्तियाँ : रीति मुक्त काव्य
- घनानंद की प्रेम अभिव्यंजना
- पाठ विवेचन एवं विश्लेषण ( विश्वनाथ मिश्र द्वारा संपादित 'घनानंद कवित्त' पुस्तक से – आरंभिक दस पद

**संभावित सन्दर्भ ग्रंथ सूची –**


| | | |
|---|---|---|
| 1. | हिंदी साहित्य का इतिहास | आचार्य रामचंद्र शुक्ल |
| 2. | पृथ्वीराज रासो | कविराव मोहन सिंह (संपादन) |
| 3. | विद्यापति पदावली | रामवृक्ष बेनीपुरी (संपादन) |
| 4. | कबीर | आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी |
| 5. | कबीर मीमांसा | डॉ. रामचंद्र तिवारी |
| 6. | जायसी ग्रंथावली | आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (संपादन) |
| 7. | त्रिवेणी | आचार्य रामचंद्र शुक्ल |
| 8. | गोस्वामी तुलसीदास | आचार्य रामचंद्र शुक्ल |
| 9. | भ्रमरगीतसार | आचार्य रामचंद्र शुक्ल |
| 10. | तुलसीदास | उदयभानु सिंह |
| 11. | सूर साहित्य | आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी |
| 12. | पंचरंग चोला पहर सखी री | माधव हाड़ा |
| 13. | बिहारी का नया मूल्यांकन | बच्चन सिंह |
| 14. | घनानंद का शृंगार काव्य | रामदेव शुक्ल |


डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
प्रोफेसर, हिंदी विभाग

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
मानविकी एवं भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग
एम.ए ( हिन्दी ), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - छायावादोत्तर काव्य
पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 414 (क) (HIL 414 क) श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय ( 1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

- पाठ्यक्रम का उद्देश्य एम .ए (हिन्दी ) के विद्यार्थियों को छायावाद के बाद कविता में आए परिवर्तनों से अवगत कराना है |
- कविता की विभिन्न काव्यधाराएँ जिस तरह समाज में व्यापक सरोकार के साथ उन्मुख रहीं उनकी विशिष्टता से भी विद्यार्थियों को अवगत कराना |
- कविता के विकास एवं संवर्धन की जानकारी उपलब्ध कराना |

पाठ्यक्रम परिणाम :

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों को आधुनिक काव्यधारा की जानकारी मिल सकेगी |
- रचना के पाठ से विद्यार्थियों की आलोचनात्मक प्रतिभा का विकास होगा |
- तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ में समझ का विकास |
- प्रतिनिधि कवियों की सृजनशीलता से विद्यार्थी के परिज्ञान का विस्तार |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

1. मध्यावधि परीक्षा : 20%
2. सत्रांत परीक्षा : 60%
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन: 20% (100 अंक में 20 अंक)

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

एम.ए ( हिन्दी ), सेमेस्टर- 3

पाठ्यक्रम शीर्षक - छायावादोत्तर काव्य
पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल-444 (HIL 444)

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय

पाठ्यक्रम विषयवस्तु –

इकाई-1 छायावादोत्तर काव्य: स्वरूप एवं प्रवृत्तियाँ (8 घंटे)

क) राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियाँ
ख) प्रगतिवादी काव्यधारा : प्रमुख प्रवृत्तियाँ
ग) प्रयोगवादी काव्यधारा : प्रमुख प्रवृत्तियाँ
घ) नई कविता : प्रमुख प्रवृत्तियाँ
ङ) समकालीन हिन्दी कविता : प्रमुख प्रवृत्तियाँ

इकाई-2 प्रयोगवादी : काव्य -संसार (8 घंटे)

क) अज्ञेय की काव्य-दृष्टि, अज्ञेय और प्रकृति
ख) मुक्तिबोध की सौन्दर्यानुभूति, मुक्तिबोध का भाषा-शिल्प
ग) समीक्षा एवं व्याख्या : 'हरी घास पर क्षण भर', 'कलगी बाजरे की' (अज्ञेय )
घ) समीक्षा एवं व्याख्या : 'अँधेरे में' 'मुझे कदम कदम पर' (मुक्तिबोध)

इकाई-3 नई कविता : काव्य -संसार (8 घंटे)

क) शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में अभिव्यक्त प्रेम-संवेदना
ख) रघुवीर सहाय की कविता में राजनीति एवं समाज
ग) समीक्षा एवं व्याख्या : 'बात बोलेगी' 'य शाम है ' (शमशेर बहादुर सिंह)
घ) समीक्षा एवं व्याख्या : 'रामदास', 'अधिनायक' (रघुवीर सहाय)

इकाई-4 समकालीन :काव्य -संसार (1) (8 घंटे)

क) त्रिलोचन के सानेट
ख) नागार्जुन की सामाजिक चेतना
ग) समीक्षा एवं व्याख्या : 'उस जनपद का कवि हूँ' कविता (त्रिलोचन)
घ) समीक्षा एवं व्याख्या : 'शासन की बंदूक' (नागार्जुन)

इकाई-5 समकालीन :काव्य -संसार (2) (8 घंटे)

क) केदारनाथ सिंह की ग्रामीण संवेदना
ख) समीक्षा एवं व्याख्या : 'बुनाई का गीत' (केदारनाथ सिंह)

सम्भावित ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

कृष्णदत्त पालीवाल अज्ञेय रचनावली,खण्ड- 2

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

भारतीय ज्ञान पीठ, 18 इंस्टीटयूशनल एरिया,लोदी रोड,
नई दिल्ली – 110 003

रघुवीर सहाय — एक समय था

राजकमल प्रकाशन प्रा .लि
1-बी,नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली- 110 002
पहला संस्करण : 1995

शमशेर बहादुर सिंह — प्रतिनिधि कवितायें

राजकमल पेपरबैक्स,
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
1-बी,नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली- 110 002
पांचवी आवृत्ति : 2005

नागार्जुन — प्रतिनिधि कवितायें

राजकमल पेपरबैक्स;
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
1-बी,नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली- 110 002

गोबिन्द प्रसाद (सम्पादन) केदारनाथ सिंह पचास कविताएँ नयी सदी के लिए
वाणी प्रकाशन,4695,21-ए दरियागंज,नई दिल्ली-110002
प्रथम संस्करण : 2012

<u>सहायक ग्रन्थ :</u>

डॉ. अनंतकीर्ति तिवारी — रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा
विश्वविद्यालय प्रकाशन,चौक,
वाराणसी- 221 001
संस्करण : 1996

डॉ. बृजबाला सिंह — मुक्तिबोध और उनकी कविता
विश्वविद्यालय प्रकाशन,चौक,
वाराणसी- 221 001
संस्करण : 2004

डॉ. हरिनिवास पाण्डेय — प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन
विश्वविद्यालय प्रकाशन,चौक,
वाराणसी- 221 001
संस्करण : 2000

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)

**हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय**

Central University of Himachal Pradesh

**(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)**

**भाषा संकाय (हिंदी विभाग)**

**स्नातकोत्तर (हिंदी) तृतीय सेमेस्टर – 2022**

**पाठ्यक्रम कूट :** HIL-475 श्रेयांक : 4

**पाठ्यक्रम शीर्षक : शोध-प्रविधि**

**पाठ्यक्रम शिक्षक :** डॉ. चंद्रकांत सिंह

**श्रेयांक :** 4 [ एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों / ट्युटोरियल / व्यावहारिक कार्य के घंटे 5 अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य और, सामूहिक कार्य , निर्धारित कार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पत्र लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के घंटे के समान है 15।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य:**

- पाठ्यक्रम का लक्ष्य है शोध की अवधारणा से परिचित कराते हुए विद्यार्थियों को गंभीर शोध के प्रति प्रेरित करना ।
- शोध के प्रकारों एवं अनिवार्य घटकों से विद्यार्थियों को अवगत कराना जिससे कि शोध के संदर्भ में सूक्ष्म बातों का ज्ञान हो सके |
- शोध की प्रविधियों एवं प्रणालियों की जानकारी देते हुए विद्यार्थियों को साहित्यिक शोध के संदर्भ में अवगत कराना |
- शोधगत सत्य तक पहुँचने के लिए तथ्यों की तात्विक मीमांसा के संदर्भ में आवश्यक जानकारी प्रदान करना |

**पाठ्यक्रम परिणाम :**

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा शोध-विषय के संदर्भ में विद्यार्थियों को परिचयात्मक ज्ञान प्राप्त हो सकेगा |
- शोध-प्रविधि पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों के भीतर गंभीर शोध की अंतर्दृष्टि का विकास होगा |
- शोध-प्रविधि पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों के भीतर आलोचकीय क्षमता का संवर्धन होगा जिससे कि कृतियों का सम्यक विवेचन हो सकेगा |
- साहित्य के इतर अन्य अनुशासनों में शोध की विधियों एवं प्रविधियों से विद्यार्थी लाभान्वित होंगे ।

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम %75कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा : 40
2. सत्रांत परीक्षा : 120
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन: 40

**<u>पाठ्यक्रम सामग्री</u> :**

**इकाई प्रथम – शोध : परिचय एवं अवधारणा** (8 घंटे )

* शोध : परिभाषा, तत्त्व एवं स्वरूप
* शोध : प्रकार एवं प्रयोजन
* शोध : विषय, अंतर्दृष्टि एवं प्रविधियाँ
* शोध में तर्क की उपादेयता
* तात्विक शोध : आशय एवं महत्त्व

**इकाई द्वितीय – विभिन्न आनुशासनिक शोध** (8 घंटे)

* वैज्ञानिक शोध एवं निष्कर्ष
* समाजशास्त्रीय शोध एवं सर्वेक्षण
* साहित्यिक शोध एवं प्रकार ( साहित्येतिहासिक, काव्यशास्त्रीय, भाषा वैज्ञानिक, शैली वैज्ञानिक, पाठानुसंधान, लोक साहित्यिक आदि)
* अंतरविद्यावर्ती शोध : विशेषताएँ एवं महत्त्व

**इकाई तृतीय –शोध के अधिकारी एवं पद्धतियाँ** (8 घंटे)

* शोधक, शोध-निर्देशक के शोधगत गुण
* शोध की प्रमुख पद्धतियाँ (साक्षात्कार, प्रश्नावली, निगमन, आगमन, सर्वेक्षण आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति)

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

**इकाई चतुर्थ – रूपरेखा एवं सामग्री संकलन (सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक) (8 घंटे)**

* रूपरेखा : अर्थ एवं स्वरूप

*रूपरेखा निर्माण की तकनीक

*सामग्री के विविध प्रकार एवं साधन ( साहित्यकार से संपर्क, पुस्तकालय की भूमिका)

* टीप ग्रहण एवं प्रामाणिकता

* प्रायोगिक पक्ष ( पुस्तक समीक्षा एवं शोध-पत्र लेखन)

**इकाई पंचम – शोध-प्रस्ताव एवं शोध-प्रबंध लेखन (सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक) (8 घंटे)**

* शोध-प्रस्ताव लेखन : अर्थ एवं स्वरूप

* विद्यार्थियों द्वारा शोध-प्रस्ताव लेखन

* शोध-प्रबंध की प्रस्तावना, संदर्भोल्लेख की जानकारी देना

* अवधि-पत्र एवं संगोष्ठी-पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को संदर्भोल्लेख एवं संदर्भ ग्रन्थ सूची से संदर्भित गृह कार्य देना |

**संदर्भ सूची-**


1. डॉ. विनय मोहन शर्मा, 'शोध प्रविधि', नेशनल पब्लिशिंग हाउस,23 दरियागंज, नई दिल्ली-11 0006
2. डॉ. सावित्री सिन्हा, डॉ. विजयेन्द्र स्नातक (संपादन), 'अनुसंधान की प्रक्रिया', नेशनल पब्लिशिंग हाउस,23 दरियागंज, नई दिल्ली-11 0006
3. प्रो. बी. एम. जैन, 'रिसर्च मैथेडोलोजी'
4. डॉ. हरिश्चंद्र वर्मा, 'शोध-प्रविधि', 'हरियाणा साहित्य अकादमी', पंचकूला


डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
...भारी (हिंदी)
... केंद्रीय विश्वविद्यालय
...-176215

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)

## हिंदी विभाग - भाषा संकाय

## स्नातकोत्तर तृतीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : **एच.आई.एल. 412 क** श्रेयांक – **4**

पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिंदी नाटक और रंगमंच**

पाठ्यक्रम शिक्षक : **डॉ प्रीति सिंह**

श्रेयांक : **4** [एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

**पाठ्यक्रम उद्देश्य :**

- पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को नाट्य परंपरा के जीवन्त तथा शाश्वत तत्त्वों के संग्रहण की क्षमता से पूर्ण करना है।
- छात्रों को नाटक, रंगमंच, संस्कृत नाटय परंपरा एवं लोक नाट्य की विरासत से परिचित कराना है।
- छात्रों में नाटक और रंगमंच को समझने उसका आस्वादन करने तथा मूल्यांकन करने की दृष्टि को बढ़ाना।
- छात्रों को हिंदी नाटक से जुड़े यथार्थ परक एवं सामाजिक संदर्भों आदि की जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों को सामाजिक, राजनीतिक, परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में नाटकों और रंगमच से अवगत कराना।

**पाठ्यक्रम परिणाम :**

- पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात विद्यार्थियों में रंगमंच कौशल का विकास होना संभव है जो व्यवसायिक दृष्टि से भी लाभप्रद रहेगा।
- हिंदी नाटक रंगमंच के अध्ययन करने के द्वारा विद्यार्थियों में सांस्कृतिक बोध निर्माण होगा।
- पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों में भारतीय चिंतन धारा की स्वभाविक समझ विकसित होगी।

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह

- पाठ्यक्रम के द्वारा छात्र लोक एवं समाज की विविध समस्याओं से संवेदनात्मक रूप से जुड़ सकेंगे।

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जासकता है |

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा - 40
2. सत्रांत परीक्षा - 120
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन - 40

**<u>पाठ्यक्रम विषयवस्तु -</u>**

**इकाई-1 नाट्य परंपरा : परिचय एवं क्रमिक विकास** (8 घंटे)

क) नाटक : परिभाषा एवं प्रमुख तत्व
ख) संस्कृत नाटकों की परंपरा
ग) हिंदी नाटकों: उद्भव और विकास
घ) लोक नाट्य परंपरा का विकास

**इकाई-2 भारतेंदु युगीन नाट्य परंपरा** (8 घंटे)

क) भारतेंदुयुगीन सामाजिक परिस्थितियाँ
ख) अन्धेर नगरी : समीक्षा एवं पाठ विवेचन
ग) अन्धेर नगरी की भाषा एवं नाट्य शिल्प का अध्ययन
घ) समकालीन दौर में 'अन्धेर नगरी' का महत्व

**इकाई-3 प्रसाद युगीन नाट्य परंपरा** (8 घंटे)

क) प्रसाद के नाटक और अभिनेयता
ख) जयशंकर प्रसाद की नाट्य-चेतना
ग) 'स्कन्दगुप्त' की ऐतिहासिकता, संवाद-शैली, गीत-योजना
घ) 'स्कन्दगुप्त': समीक्षा एवं पाठ विवेचन

**इकाई-4 प्रसादोत्तर नाट्य परंपरा** (8 घंटे)

क) हिंदी नाट्य परंपरा में मोहन राकेश का योगदान
ख) 'लहरों के राजहंस' : ऐतिहासिकता और आधुनिकता का द्वनदव, समीक्षा एवं पाठ विवेचन

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह

ग) हानूश : व्यक्ति और सत्ता का द्वन्द, हानूश : समीक्षा एवं पाठ विवेचन

घ) जगदीश चंद्र माथुर की नाट्य चेतना, कोणार्क में रोमानियत एवं प्रगतिशीलता का द्वन्द

ङ) कोणार्क : समीक्षा एवं पाठ विवेचन

**इकाई-5 समकालीन हिंदी नाटक : परिप्रेक्ष्य एवं संभावनाएँ** (8 घंटे)

क) समकालीन हिंदी नाटक : प्रमुख चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

ख) नुक्कड़ नाटक का स्वरूप

ग) बाल रंगमंच : स्थिति और संभावनाएँ

**संभावित संदर्भ ग्रन्थ सूची :**

**आधार ग्रंथ :**


1. ओम प्रकाश सिंह (सम्पादन) - भारतेन्दु हरिश्चंद्र ग्रंथावली भाग-1, प्रकाशन संस्थान, दरियागंज नई दिल्ली

2. जयशंकर प्रसाद - प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी, नार्थ इंडिया पब्लिशर्स, सोनिया विहार, नई दिल्ली- 110094

3. भीष्म साहनी - हानशू, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 110002

4. मोहन राकेश - लहरों के राजहंस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 110002

5. जगदीश चंद्र माथुर - कोणार्क, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - 110002


**संदर्भ ग्रंथ :**


6. डॉ. धीरेन्द्र शुक्ल (सम्पादन) - हिंदी नाट्य परिदृश्य, प्रकाशन संस्थान,नई दिल्ली - 110002

7. बच्चन सिंह – हिंदी नाटक, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - 110002

8. गिरीश रस्तोगी – भारतेन्दु और अंधेर नागरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद - 211004

9. रेवती रमण - प्रसाद और स्कंदगुप्त, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद - 211004

10. गिरीश रस्तोगी - हिंदी नाटक और रंगमंच: नयी दिशाएं, नये प्रश्न, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद

11. कृष्णानन्द तिवारी - नाटककार मोहन राकेश, प्रिय साहित्य सदन, दिल्ली - 110094


डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)

## हिंदी विभाग - भाषा संकाय

## स्नातकोत्तर तृतीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : **एच.आई.एल. 478** श्रेयांक – **4**

पाठ्यक्रम शीर्षक : **साहित्य समीक्षा**

पाठ्यक्रम शिक्षक : **डॉ प्रीति सिंह**

श्रेयांक : **4** [एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

**पाठ्यक्रम उद्देश्य :**

- पाठ्यक्रम द्वारा छात्र साहित्य के इतिहास के जीवन्त तथा शाश्वत तत्त्वों के संग्रहण की क्षमता से पूर्ण होंगे।
- छात्रों साहित्य समीक्षा की बहुविस्तृत विरासत से परिचित होंगे।
- छात्रों में साहित्यिक समझ एवं उसका आस्वादन करने तथा मूल्यांकन करने की दृष्टि विकसित होगी।
- छात्रों साहित्य समीक्षा के संदर्भ में विभिन्न समीक्षकों की समीक्षा दृष्टि से परिचित होंगे।
- छात्र युगीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में साहित्य समीक्षा से अवगत होंगे।

**पाठ्यक्रम परिणाम :**

- साहित्य समीक्षा पाठ्यक्रम के द्वारा साहित्यिक मूल्यांकन को समझने की क्षमता विकसित करेंगे।
- साहित्य समाज को बेहतर ढंग से समझने की नवीन दृष्टि का विकास करेंगे।
- साहित्य समीक्षा के अध्ययन के द्वारा विद्यार्थी गुण और दोष के मूल्यांकन करने की क्षमता का विकास करेंगे।
- साहित्य समीक्षा के अध्ययन के परिणामस्वरूप जीवन के यथार्थ और आदर्श में समन्वय करने की दृष्टि विकसित होगी।

डॉ. प्रीति सिंह

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)

- साहित्य समीक्षा के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थियों में धर्म, नीति, तर्क, सौन्दर्य को समझने की नई दृष्टि प्राप्त होगी।

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जासकता है |

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा - 40
2. सत्रांत परीक्षा - 120
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन - 40

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु -**

**इकाई -1 साहित्य और समीक्षा** (8 घंटे)

क) साहित्य की अवधारणा एवं स्वरूप
ख) समीक्षा: अवधारणा और स्वरूप
ग) हिंदी समीक्षा: उद्भव एवं विकास

**इकाई-2 समीक्षा: विविध आयाम** (8 घंटे)

क) समीक्षा की प्रविधि
ख) समीक्षा का प्रयोजन और उपयोगिता
ग) समीक्षा एवं समीक्षक के गुण

**इकाई-3 हिन्दी के प्रमुख समीक्षक, समीक्षा दृष्टि** (8 घंटे)

क) आचार्य रामचंद्र शुक्ल की समीक्षा दृष्टि
ख) शुक्लवर्ती समीक्षकों की दृष्टि: डॉ नगेन्द्र, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
ग) नन्ददुलारे वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी की समीक्षा दृष्टि

**इकाई-4 समकालीन हिंदी समीक्षक** (8 घंटे)

क) रामविलास शर्मा की समीक्षा दृष्टि
ख) नामवर सिंह की समीक्षा दृष्टि
ग) मुक्तिबोध, अज्ञेय, विजयदेव नारायण साही की समीक्षा दृष्टि

**इकाई-5 समीक्षात्मक रचनाओं का अध्ययन** (8 घंटे)

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

क) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल- त्रिवेणी का अध्ययन
ख) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी- कबीर
ग) आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी- नया साहित्य: नये प्रश्न
घ) डॉ रामविलास शर्मा- भाषा और समाज

**संभावित संदर्भ ग्रन्थ सूची :**


1. हिंदी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल
2. हिंदी आलोचना – डॉ. विश्वनाथ तिवारी
3. हिंदी आलोचना का विकास – मधुरेश, सुमित प्रकाशन
4. हिंदी आलोचना इतिहास और सिद्धांत – योगेंद्र प्रताप सिंह, वाणी प्रकाशन
5. हिंदी आलोचना का दूसरा पाठ – निर्मला जैन, राजकमल प्रकाशन
6. समकालीन हिंदी आलोचना – परमानन्द श्रीवास्तव
7. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिंदी आलोचना - रामविलास शर्मा
8. इतिहास और आलोचना – नामवर सिंह
9. आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द - बच्चन सिंह
10. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. रामकुमार वर्मा
11. साहित्य और इतिहास दृष्टि – मैनेजर पाण्डेय
12. साहित्यालोचन – डॉ. श्यामसुंदर दास, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद,



डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)

## भाषा संकाय (हिंदी विभाग)

## स्नातकोत्तर (हिंदी) तृतीय सेमेस्टर

**पाठ्यक्रम कूट :** HIL-422 **श्रेयांक :** 04

**पाठ्यक्रम शीर्षक :** लोक साहित्य

**पाठ्यक्रम शिक्षक :** डॉ0 प्रिया शर्मा

**श्रेयांक : 4** (एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला/व्यावहारिक/ट्युटोरियल/शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ कार्य के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतंत्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित कार्य/वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पर लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के समान है।

**पाठ्यक्रम उद्देश्यः**

- लोक साहित्य के अध्ययन से छात्रों को अपनी संस्कृति की धरोहर से जुड़ने का बोध होगा।
- इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को भारतीय संस्कृति, धर्म, रीति–रिवाज़, कला, साहित्य तथा पर्यावरण आदि लोकधारा से परिचित करवाना है।
- मूलतः लोक की मौलिक अभिव्यक्ति की प्राचीन विरासत के अध्ययन से छात्रों का मानसिक और बौद्धिक विकास होगा।

**पाठ्यक्रम परिणामः**

- अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान एवं अनुराग का विस्तार।
- वर्तमान संदर्भ में लोक साहित्य के संरक्षण, प्रलेखन को सहेजते हुए लोक साहित्य की परिधि को विस्तृत करना।
- लोक साहित्य के अध्ययन–मनन से भाषा के संवर्धन और विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।
- इस पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थी लोक साहित्य की समझ अर्जित कर वर्तमान स्थिति में परिवर्तन के संवाहक होंगे।

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

**उपस्थिति अनिवार्यता:**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड:**

1. मध्यावधि परीक्षा – 40%
2. सत्रांत परीक्षा – 120%
3. सतत आंतरिक मूल्यांकन – 40%

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु:**

**इकाई – 1 लोक साहित्य : अवधारणा और विकास** **(08 घंटे)**

- लोक साहित्य : अभिप्राय एवं स्वरूप
- लोक साहित्य : परम्परा और प्रयोग
- लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति

**इकाई – 2 लोक साहित्य : अध्ययन एवं विश्लेषण** **(08 घंटे)**

- लोक साहित्य एवं शिष्ट साहित्य का अंतः संबंध
- लोक साहित्य के अध्ययन की चुनौतियाँ एवं संकलन की समस्याएँ

**इकाई – 3 लोक साहित्य : संरक्षण एवं संवर्द्धन** **(08 घंटे)**

- लोक धर्म एवं लोक विश्वास : एक परिचय
- लोक से संबंधित व्रत कथाएँ, लोकोक्तियाँ और मुहावरे

**इकाई – 4 हिंदी साहित्य और लोक साहित्य** **(08 घंटे)**

- आदिकालीन लोक साहित्य : एक परिचय
- भक्तिकालीन लोक साहित्य : एक परिचय

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)

- व्याख्या एवं समीक्षा : अमीर खुसरो के लोक गीत ('काहे को ब्याहे बिदेस', 'बन बोलन लागे मोर', 'छाप तिलक सब छीनी', 'सावन आया, मोरे पिया घर आए')

**इकाई – 5 हिमाचल प्रदेश का लोक साहित्य : विभिन्न विधाएँ (08 घंटे)**

- लोक गीतों में मातृभूमि प्रेम, ऋतु गीत, संस्कार गीत, देवी देवताओं के गीत, श्रमगीत
- लोक नाट्य के विविध रूप (रास, रामलीला, भगत, स्वाँग, हरण, बाँढा, हरणात्र, नाटी आदि)
- चंबा–कांगड़ा की लोक कथाएँ एवं लोक गाथाएँ : एक परिचय

**संभावित सन्दर्भ ग्रंथ सूची:**


| | |
|---|---|
| 1. लोक साहित्य की भूमिका | कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहाबाद |
| 2. भारत में लोक साहित्य | कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहाबाद |
| 3. भारत की लोक कथाएँ | ए0 के0 रामानुजन (सं0), नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली |
| 4. खड़ी बोली का लोक साहित्य | डॉ0 सव्यरानी, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद |
| 5. लोक साहित्य विज्ञान | डॉ0 सत्येन्द्र, अपोलो प्रकाशन, जयपुर |
| 6. लोक धारा | हीरामणि सिंह 'साथी', अनंग प्रकाशन, दिल्ली |
| 7. जनपदीय भाषा साहित्य (अवधी काव्य) | डॉ0 सूर्य प्रसाद दीक्षित (सं0), प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ |
| 8. भारतीय लोक–साहित्य | श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली |
| 9. लोक साहित्य और संस्कृति | डॉ0 दिनेश्वर प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद |
| 10. लोक साहित्य : एक निरूपण | रामचंद्र बोड़ा, एजूकेशनल प्रेस, बीकानेर |
| 11. लोक साहित्य के प्रतिमान | डॉ0 कुंदनलाल उप्रेती, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ |
| 12. आदिवासी लोकगीतों की संस्कृति | डॉ0 राम रतन प्रसाद, अनंग प्रकाशन, दिल्ली |
| 13. लोक काव्य के क्षितिज | डॉ0 हरिसिंह पाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली |
| 14. अमीर खुसरो और उनका साहित्य | डॉ0 भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली |
| 15. लोक साहित्य विमर्श | डॉ0 स्वर्णलता, रत्न स्मृति प्रकाशन, बीकानेर |
| 16. लोकगीत की सत्ता | डॉ0 सुरेश गौतम, शब्द सेतु प्रकाशक, दिल्ली |
| 17. लोक साहित्य की भूमिका | डॉ0 रवीन्द्र भ्रमर, साहित्य सदन, कानपुर |
| 18. लोक साहित्य का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन | श्रीराम शर्मा, निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली |
| 19. लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा | डॉ0 मनोहर शर्मा, रोशन लाल जैन एंड संस, जयपुर |


डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)

| | |
|---|---|
| 20. लोक साहित्य की रूपरेखा | डॉ0 कृष्णचन्द्र शर्मा (सं0), अमित प्रकाशन, गाजियाबाद |
| 21. बिहार की लोक कथाएँ, भाग–1 | मृदुला सिन्हा, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार |
| 22. बिहार की लोक कथाएँ, भाग–2 | मृदुला सिन्हा, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार |

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)

## भाषा संकाय (हिंदी विभाग)

## स्नातकोत्तर (हिंदी) तृतीय सेमेस्टर

**पाठ्यक्रम कूट** : HIL-487 **श्रेयांक** : 04

**पाठ्यक्रम शीर्षक** : शोध–प्रस्ताव लेखन

**पाठ्यक्रम शिक्षक** : डॉ0 प्रिया शर्मा

**श्रेयांक** : 4 (एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला/व्यावहारिक/ट्युटोरियल/शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ कार्य के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतंत्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित कार्य/वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पर लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के समान है।

**पाठ्यक्रम उद्देश्यः**

- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य स्नातकोत्तर हिंदी के विद्यार्थियों को शोध–प्रस्ताव लेखन की जानकारी देना है ताकि वे शोध–प्रस्ताव के कार्य को व्यवस्थित रूप से जान सकें और शोध की महता से परिचित हो सकें।
- शोध–प्रस्ताव शोध परियोजना को प्रस्तावित करने वाला महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है। यह पूरी परियोजना की रूपरेखा प्रस्तुत करता है और विद्यार्थियों को शोध के उद्देश्य, वैधता एवं आवश्यकता के संदर्भ में जानकारी प्रदान करता है।
- इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों को शोध–प्रस्ताव के आवश्यक घटक, साहित्य समीक्षा, शोध प्रश्न एवं शोध पद्धति की पूर्ण जानकारी मिलती है।

**पाठ्यक्रम परिणामः**

- शोध–प्रस्ताव लेखन पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रों की चिंतन–मनन, निर्णय आदि लेने की बौद्धिक शक्तियों का विकास करना।
- विद्यार्थियों की नानाविध सर्जनात्मक तथा रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास करना।

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)

- पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों को शोध–प्रस्ताव लेखन की जानकारी प्रदान करना एवं ज्ञान की सत्यता का परीक्षण।

**उपस्थिति अनिवार्यता:**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्रों का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्रों को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड:**

1. मध्यावधि परीक्षा – 40%
2. सत्रांत परीक्षा – 120%
3. सतत आंतरिक मूल्यांकन – 40%

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु:**

**इकाई – 1 शोध–प्रस्ताव लेखन की अवधारणा** **(08 घंटे)**

- शोध–प्रस्ताव : अर्थ एवं स्वरूप
- शोध–प्रस्ताव लेखन की पृष्ठभूमि एवं रूपरेखा
- शोध–प्रस्ताव लेखन : प्रकार, उद्देश्य एवं महत्व

**इकाई – 2 शोध–प्रस्ताव लेखन एवं शोध–दृष्टि** **(08 घंटे)**

- शोध–प्रस्ताव में महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन
- उपयोगिता एवं वैधता का आकलन
- शोधक की समीक्षा–कला

**इकाई – 3 शोध–प्रस्ताव लेखन के महत्वपूर्ण बिंदु** **(08 घंटे)**

- शोधक की अभिरुचि
- शोध–प्रस्ताव लेखन की उपादेयता एवं क्रिया–विधि
- शोध–प्रस्ताव लेखन में विभिन्न सावधानियाँ

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
...केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)

**इकाई – 4 शोध–प्रस्ताव लेखन के प्रमुख घटक** **(08 घंटे)**

- उद्देश्य एवं संभावनाएँ
- शोध–प्रविधि की भूमिका
- प्रस्तुत शोध कार्य की नवीनता
- प्रस्ताव लेखन में अध्यायीकरण का महत्व
- आधार ग्रंथों एवं सहायक ग्रंथों का महत्व

**इकाई – 5 शोध–प्रस्ताव लेखन में पुस्तकालय एवं विश्वविद्यालय की भूमिका** **(08 घंटे)**

- प्रस्ताव–लेखन में पुस्तकालयों की भूमिका
- प्रस्ताव–लेखन में विश्वविद्यालय की भूमिका
- विद्यार्थियों द्वारा शोध–प्रस्ताव लेखन (प्रायोगिक कार्य)

**संभावित ग्रंथ सूची:**

**आधार ग्रंथ**


| | |
|---|---|
| 1. हिन्दी शोध प्रविधि की रूप रेखा | डॉ. मनमोहन गिल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर |
| 2. शोध प्रविधि | डॉ. एन. के. शर्मा, केंद्रीय हिन्दी शिक्षा संस्थान, आगरा |
| 3. शोध प्रस्ताव कैसे करें तैयार | पैम डेनिकोलो, सेज प्रकाशन, दिल्ली, 2017 |
| 4. रिसर्च मेथोडोलाजी | वीरेन्द्र प्रकाश, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2007 |
| 5. हिन्दी अनुसंधान | विजय पाल सिंह |
| 6. अनुसंधान | डॉ. सत्येन्द्र |
| 7. शोध प्रविधि | डॉ. विनयमोहन शर्मा |
| 8. हिन्दी शोध तन्त्र की रूपरेखा | डॉ. मनमोहन सहगल |
| 9. शोध सामग्री | आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी |
| 10. Thesis Writing: Manual for All Researchers | Rahim, Abdul |
| 11. शोध प्रविधि (Research Methodology) | हरीश कुमार खत्री |


डॉ. चन्द्रकान्त सिंह

डॉ. सोमप्रकाश प्रजापति

**सहायक ग्रंथ**


| | |
|---|---|
| 12. शोध : सिद्धांत एवं प्रक्रिया | डॉ. एस. के. श्रीवास्तव |
| 13. शोध पद्धतियाँ | डॉ. डी. एस. बघेल, एस.बी.पी.डी. प्रकाशन, 2021 |
| 14. सामाजिक शोध : सिद्धांत एवं व्यवहार | डी. के. लाल दास, रावत पब्लिकेशन, 2017 |
| 15. शोध कैसे करें | डॉ. पुनीत बिसारिया, अटलांटिक प्रकाशन, दिल्ली, 2022 |
| 16. समसामयिक शोध निबन्ध और समीक्षा | छाया चौकसे, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, 2016 |
| 17. रिसर्च प्रोजेक्ट तैयार करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन | जिना ओ लियरी, सेज प्रकाशन, दिल्ली, 2017 |


डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
भाषा संकाय, हिन्दी विभाग, सेमेस्टर – तृतीय
पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL – 486
पाठ्यक्रम का नाम : अनुसारक : विकास एवं अनुप्रयोग
पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉओमप्रकाश प्रजापति .
श्रेयांक : 04
अनुसारक : विकास एवं अनुप्रयोग

**पाठ्यक्रम का उद्देश्य:-**

- विभिन्न ज्ञान अनुशासनों में मशीनी अनुवाद का विकास करना।
- मशीनी अनुवाद के माध्यम से अंग्रेजी पाठ्यक्रम की सामग्री को हिंदी में बदलना।
- अनुवाद को वर्तमान सांस्कृतिक, सामाजिक एवं प्रयोजनपरक प्रविधियों से जोड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष को विकसित करना।
- भारतीय एवं वैश्विक परिदृश्य में हिंदी को मशीनी अनुवाद के माध्यम से सम्पन्न भाषा बनाना।
- मशीनी अनुवाद को प्रमुख उपकरण के रूप में विकसित करना।

**पाठ्यक्रम परिणाम:-**

- भारत में मशीनी अनुवाद की प्रक्रिया का परस्पर विचार-विमर्श।
- **(Word Sense Disambiguation in Machine Translation with Special Reference to Anusaaraka)**
- छात्रों की शैक्षणिक अभिरुचि तथा अधिगम क्षमता में वृद्धि करना।

**मूल्यांकन:-**

पाठ्यक्रम में दो स्तरों पर मूल्यांकन होगा :-

1. आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक, मध्यावधि मूल्यांकन 40 अंक, कुल = 80 अंक
2. सत्रांत मूल्यांकन- 120 अंक

छात्रों को मध्यावधि और संत्रात परीक्षा दोनों मिलाकर (50 प्रतिशत) अंक प्राप्त करने होंगे

**इकाई - 1 मशीनी अनुवाद:स्वरूप और संभावनाएं**

1. मानव साधित अनुवाद
2. मशीनी साधित अनुवाद
3. मशीनी अनुवाद का ऐतिहासिक संदर्भ

**इकाई – 2 मशीनी अनुवाद की प्रक्रिया**

1. प्रत्यक्ष विधि
2. परोक्ष विधि
3. अंतर भाषिक विधि

**इकाई – 3 मशीनी अनुवाद की प्रणाली**

1. नियम आधारित प्रणाली
2. उदाहरण आधारित प्रणाली
3. सांख्यिकी आधारित प्रणाली

**इकाई – 4** मशीनी अनुवाद प्रणाली के घटक

1. भाषा
2. कंप्यूटर
3. मानव

**इकाई - 5 अनुसारक का परिचय एवं शब्द अर्थ निर्धारण**

1. अनुसारक का परिचय
2. शब्द अर्थ निर्धारण का परिचय
3. शब्द अर्थ निर्धारण की प्रक्रिया

**सहायक ग्रंथ**


1. A Tutorial On Machine Translation : King Margaret, Working Paper 53, ISSCO, Geneva.
2. Natural Language Processing : Akshar Bharti, Vineet Chaitnya, Rajiv Sangal, Prentice Hall of India, New Delhi.
3. Computational Linguistics : Gristman.
4. Machine Translation Of Languages: Locke, Willam N.Y.& A Donald Booth, The Technology Prosess of MIT.
5. Machine Translation System, Slocum, J. Cambridge Uni.Press.
6. Machine Translation: Theoritical & Methodological Issues, Cambridge Uni. Press.

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

भाषा संकाय, हिन्दी विभाग

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL - 415 (क)

पाठ्यक्रम का नाम : हिन्दी और जनसंचार माध्यम

सेमेस्टर चतुर्थ –

अधिकतम अंक -100 4 क्रेडिट उत्तीर्णांक – 40

**पाठ्यक्रम का उद्देश्य:-**

- ❖ जनसंचार के विविध आयामों का परिचय देना।
- ❖ हिंदी पत्रकारिता की भाषा-संरचना शैली का ज्ञान करवाना।
- ❖ जनसंचार माध्यमों से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण की क्षमता का विकास करवाना।
- ❖ जनसंचार की अभिव्यक्तियाँ- विज्ञापन की हिंदी के रूप, नारों के नमूने; मुद्रण ओर इलेक्ट्रॉनिक के माध्यम से।
- ❖ विभिन्न संचार माध्यमों में हिंदी का विकास करना।

**पाठ्यक्रम परिणाम:-**

- ❖ भारत में प्रेस का विकास- हिंदी समाचार पत्रों का उद्भव और विकास।
- ❖ जन संचार एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया में हिंदी की उपादेयता तथा सूचना प्रौद्योगिकी के नए क्षेत्र में हिंदी की विकास यात्रा की जानकारी देकर उनमे अभिरुचि निर्माण।
- ❖ हिंदी को वर्तमान सांस्कृतिक, सामाजिक एवं प्रयोजनपरक पक्षों से जोड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष की ज्ञान प्राप्ति।
- ❖ छात्रों की शैक्षणिक संबंधी अभिरुचि तथा आस्वादन क्षमता में वृद्धि।
- ❖ भारतीय एवं वैश्विक परिदृश्य में खेल, उत्पादन, मनोरंजन उद्योग जैसे वृहद् क्षेत्रों मे विधि सलाहकारों और नियोजकों की उपादेयता।

**मूल्यांकन:-**

पाठ्यक्रम में दो स्तरों पर मूल्यांकन होगा :-

1. आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक, मध्यावधि मूल्यांकन 40 अंक, कुल = 80 अंक
2. सत्रांत मूल्यांकन- 120 अंक

छात्रों को मध्यावधि और संत्रात परीक्षा दोनों मिलाकर (50 प्रतिशत) अंक प्राप्त करने होंगे

15/5/24

डा. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हि.प्र.के.वि.वि. धर्मशाला (हि.प्र.)

15.5.24

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1, धर्मशाला-176215

Dean, School of Languages
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Himachal Pradesh
धौलाधार परिसर-1, धर्मशाला-176215
Dhauladhar Parisar-1, Dharamshala-176215

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

भाषा संकाय, हिन्दी विभाग

पाठ्यक्रम कूट संकेत : **HIL -** 415 (क)

पाठ्यक्रम का नाम : हिन्दी और जनसंचार माध्यम

सेमेस्टर चतुर्थ –

**अधिकतम अंक -100**     **4 क्रेडिट**     **उत्तीर्णांक – 40**

**इकाई-1 जनसंचार माध्यम अर्थ एवं परिभाषा**     **08 कालांश**

1. संचार का अर्थ एवं परिभाषा
2. जनसंचार का अर्थ एवं परिभाषा
3. दृश्य एवं लिखित जनसंचार माध्यम
4. श्रव्य जनसंचार माध्यम
5. जनसंचार माध्यम तथा राष्ट्रीय विकास

**इकाई-2 समाचार तथा हिंदी**     **08 कालांश**

1. समाचार प्रकार
2. समाचार लेखन सिद्धांत
3. समाचार लेखक के गुण
4. रेडियो तथा टेलीविजन के लिए समाचार लेखन

**इकाई-3 जनसंचार माध्यम और भाषा स्वरूप**     **08 कालांश**

1. दृश्य माध्यम और भाषा स्वरूप
2. श्रव्य माध्यम और भाषा स्वरूप
3. दृश्य श्रव्य माध्यम और भाषा स्वरूप

**इकाई-4 जनसंचार सामग्री का संपादन**     **08 कालांश**

1. संपादन के प्रकार
2. संपादन की प्रक्रिया

**इकाई-5 जनसंचार माध्यमों का वर्तमान स्वरूप और हिन्दी भाषा**     **08 कालांश**

1. भूमंडलीकरण और जनसंचार माध्यम
2. सामाजिक परिवर्तन में जनसंचार माध्यमों की भूमिका
3. हिन्दी भाषा के प्रसार में जनसंचार माध्यमों की भूमिका

15/5/24

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हि.प्र.कें.वि.वि. धर्मशाला (हि.प्र.)

15.5.24

Dean, School of Languages
Central University of Himachal Pradesh
Dhauladhar Parisar-1, 176215

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्व...
धौलाधार परिसर-1, धर्मशाला-17...

**सहायक ग्रंथ -**


1. हिंदी पत्रकारिका एवं जनसंचार: डॉ. ठाकुर दत्त शर्मा 'आलोक', वाणी प्रकाशन, दिल्ली
2. समाचार-पत्र प्रबंधन: गुलाब कोठारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
3. मिडिया की बदलती परिभाषा: डॉ. अजय कुमार सिंह, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
4. हिंदी पत्रकारिता: डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
5. हिंदी भाषा अभिव्यक्ति: डॉ. हरदेव बाहरी, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली
6. जनसंचार बदलते परिप्रेक्ष्य में: डॉ. बलबीर कुंदरा, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
7. नये जनसंचार माध्यम और हिंदी: सुधीश पचौरी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. समाचार पत्रों का इतिहास: पं. अंबिकाप्रसाद वाजपेयी, ज्ञानमंडल, दिल्ली
9. सूचना प्रोद्योगिकी और जनमाध्यम: पं. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
10. टेलीविजन की कहानी: डॉ. श्याम कश्यप, मुकेश कुमार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली



डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

ई-मेल : opmgahv@gmail.com मोबाइल : 8962115238


**पाठ्यक्रम बोध रचना- 415 (क) हिन्दी और जनसंचार माध्यम**

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1, धर्मशाला-176215

15/5/24

15.5.24

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

भाषा संकाय, हिन्दी विभाग सेमेस्टर ,– चतुर्थ

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL - 415 (क)

पाठ्यक्रम का नाम : हिन्दी और जनसंचार माध्यम

पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉओमप्रकाश प्रजापति .

श्रेयांक : 04

## इकाई-1 जनसंचार माध्यम अर्थ एवं परिभाषा

1. संचार का अर्थ एवं परिभाषा
2. जनसंचार का अर्थ एवं परिभाषा
3. दृश्य एवं लिखित जनसंचार माध्यम
4. श्रव्य जनसंचार माध्यम
5. जनसंचार माध्यम तथा राष्ट्रीय विकास

## इकाई-2 समाचार संचार तथा हिंदी

1. समाचार प्रकार
2. समाचार लेखन सिद्धांत
3. समाचार लेखक के गुण
4. रेडियो तथा टेलीविजन के लिए समाचार लेखन

## इकाई-3 जनसंचार माध्यम और भाषा स्वरूप

1. दृश्य माध्यम और भाषा स्वरूप
2. श्रव्य माध्यम और भाषा स्वरूप
3. दृश्य श्रव्य माध्यम और भाषा स्वरूप

07/12/22

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

## इकाई-4 जनसंचार सामग्री का संपादन

1. संपादन के प्रकार
2. संपादन की प्रक्रिया

## इकाई-5 जनसंचार माध्यमों का वर्तमान स्वरूप और हिन्दी भाषा

1. भूमंडलीकरण और जनसंचार माध्यम
2. सामाजिक परिवर्तन में जनसंचार माध्यमों की भूमिका
3. हिन्दी भाषा के प्रसार में जनसंचार माध्यमों की भूमिका

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

पाठ्यक्रम बोध रचना - 423 (क) हिन्दी और जनसंचार माध्यम

14/12/2022

7/12/22

7.12.22

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें –

01 गुलाब कोठारी — समाचार-पत्र प्रबंधन, राधाकृष्ण, दिल्ली, 1992

02 डॉ. ठाकुरदत्त शर्मा 'आलोक' — हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार, वाणी, दिल्ली, 2000

07/12/22
डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

7.12.22
(डॉ प्रिया शर्मा)

14/12/2022

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
भाषा संकाय, हिन्दी विभाग, सेमेस्टर - चतुर्थ

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL - 490

पाठ्यक्रम का नाम : प्रशासनिक साहित्य का मशीनी अनुवाद : विश्लेषण एवं संभावनाएं

पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

श्रेयांक : 04

## प्रशासनिक साहित्य का मशीनी अनुवाद : विश्लेषण एवं संभावनाएं

### पाठ्यक्रम का उद्देश्य

1. विभिन्न ज्ञान अनुशासनों में अनुवाद प्रक्रिया का विकास करना।
2. अनुवाद के माध्यम से अंग्रेजी पाठ्यक्रम की सामग्री की हिंदी में सम उपलब्धता
3. अनुवाद को वर्तमान सांस्कृतिक, सामाजिक एवं प्रयोजनपरक आयामो से जोड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष को विकसित करना।
4. भारतीय एवं वैश्विक परिदृश्य में हिंदी को अनुवाद के माध्यम से सम्पन्न भाषा करना।
5. अनुवाद अनुशासन को विदेशी और द्वितीय भाषा शिक्षण में एक प्रमुख उपकरण के रूप में विकसित करना।

### पाठ्यक्रम परिणाम (co)

### इकाई - 1 अनुवाद का अर्थ परिभाषा एवं क्षेत्र

1. अनुवाद का अर्थ
2. अनुवाद की परिभाषा
3. अनुवाद का क्षेत्र

I. अंत: भाषिक अनुवाद
II. अंतर भाषिक अनुवाद
III. अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद

### इकाई - 2 मशीनी अनुवाद

1. मशीनी अनुवाद का ऐतिहासिक संदर्भ
2. भारत में विकसित मशीनी अनुवाद

(अनुभारती, मंत्रा, मात्रा, शक्ति, अनुवादक)

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

### इकाई - 3 कंप्यूटर का स्वरूप

1. कंप्यूटर का अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप
2. डाटा प्रोसेसिंग
3. डाटा प्रस्तुतीकरण

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
-176215

### इकाई - 4 कंठस्थ की संकलपना

1 ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.)
2 कंठस्थ की मुख्य विशेषताएं
3 वर्ण – विन्यास

### इकाई - 4 प्रायोगिक

(कंठस्थ का प्रायोगिक अभ्यास एवं रिपोर्ट लेखन)

7.12.22
(डॉ [illegible])

14/12/2022

**हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय**

Central University of Himachal Pradesh

**(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)**

**भाषा संकाय (हिंदी विभाग)**

**स्नातकोत्तर (हिंदी) चतुर्थ सेमेस्टर**

**पाठ्यक्रम कूट :** HIL 488 श्रेयांक : 02

**पाठ्यक्रम शीर्षक :** शोध-पत्र लेखन

**पाठ्यक्रम शिक्षक :** डॉ. चंद्रकांत सिंह

**श्रेयांक :** 4 [ एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों / ट्युटोरियल / व्यावहारिक कार्य के घंटे 5 और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य , निर्धारित कार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पत्र लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के घंटे के समान है 15।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य:**

- शोध का अर्थ स्पष्ट करते हुए शोध-पत्र लेखन के संदर्भ में जानकारी देना ।
- शोध-पत्र लेखन से पूर्व तथ्य संग्रह के महत्त्व का प्रतिपादन
- शोध-पत्र लेखन में तत्व-मीमांसा को रेखांकित करना।

**पाठ्यक्रम परिणाम :**

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों को शोध-पत्र लेखन की जानकारी मिल सकेगी ।
- शोध-पत्र लेखन से विद्यार्थियों की भाषिक दक्षता एवं समझ का विकास होगा ।
- शोध-पत्र लेखन के बाद विद्यार्थियों को शोध-पत्र लेखन का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा।
- प्रश्नाकुलता, विवेकशीलता एवं प्रखरता जैसे महत्वपूर्ण गुण विद्यार्थियों के भीतर विकसित होंगे ।

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75 % कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा : 20%
2. सत्रांत परीक्षा : 60%
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन: 20% (100 अंक में 20 अंक)

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

## पाठ्यक्रम विषयवस्तु –

**इकाई -1** (04 घंटे)

- शोध-पत्र की अवधारणा एवं स्वरूप
- शोध का स्वरूप एवं महत्त्व
- आलोचना, समीक्षा तथा शोध

**इकाई- 2** (04 घंटे)

- शोध के प्रकार एवं पद्धति
- साहित्यिक शोध : विशेषता और आयाम
- शोध में तात्त्विक समीक्षा का महत्त्व

**इकाई- 3** (04 घंटे)

- शोध-पत्र लेखन का महत्व
- शोध-पत्र लेखन में विषय चयन की भूमिका
- शोध-पत्र लेखन में परिकल्पना की उपादेयता

**इकाई- 4** (04 घंटे)

- शोध-पत्र लेखन में सामग्री चयन का महत्व
- शोध-पत्र लेखन में उद्धरण एवं सन्दर्भ का महत्व

**इकाई- 5** (04 घंटे)

- शोध-पत्र लेखन में पुस्तकालय की भूमिका
- शोध-पत्र लेखन में कम्प्यूटर की आवश्यकता
- विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्रों का विवेचन (प्रायोगिक कार्य)

## संभावित सन्दर्भ ग्रंथ सूची –


1. शोध प्रविधि — हरिश्चंद्र वर्मा
2. शोध प्रविधि — विनयमोहन शर्मा
3. हिंदी अनुसंधान — विजयपाल सिंह
4. शोध का स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि — बैजनाथ सिंहल


डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)

## हिंदी विभाग - भाषा संकाय

## स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : **एच.आई.एल. 416 क** श्रेयांक – **4**

पाठ्यक्रम शीर्षक : **गोस्वामी तुलसीदास: एक विशेष अध्ययन**

पाठ्यक्रम शिक्षक : **डॉ प्रीति सिंह**

श्रेयांक : **4** [एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्युटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

**पाठ्यक्रम उद्देश्य :**

- पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को गोस्वामी तुलसीदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित कराना है।
- तुलसी साहित्य की प्रासंगिकता एवं महत्ता से विद्यार्थी परिचित होंगे।
- गोस्वामी तुलसीदास की समन्वय दृष्टि, दार्शनिक चेतना आदि पक्षों को प्रस्तुत कर उनसे विद्यार्थी को अवगत होंगे।

**पाठ्यक्रम परिणाम :**

- पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी सगुण भक्ति धारा का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- तुलसी साहित्य का अवलोकन करने से विद्यार्थी तुलसी वांगमय मे दक्ष होंगे।
- पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी संवेदनात्मक संवर्धन करेंगे।

**उपस्थिति अनिवार्यता :**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जासकता है।

**मूल्यांकन मापदंड :**

1. मध्यावधि परीक्षा - 40

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

2. सत्रांत परीक्षा - 120
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन - 40

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु -**

**इकाई -1 तुलसीदास: एक युगीन पुरोधा** (8 घंटे)

क) तुलसीदास की युगीन पृष्ठभूमि
ख) गोस्वामी तुलसीदास का रचना संसार

**इकाई-2 तुलसीदास की काव्यदृष्टि** (8 घंटे)

क) गोस्वामी तुलसीदास की समन्वय भावना व लोकमंगल
ख) भक्तिभावना एवं दर्शन
ग) तुलसी के राम व रामराज्य की परिकल्पना

**इकाई-3 रामचरित मानस** (8 घंटे)

क) बालकाण्ड - प्रारंभ से 10 दोहे तक
ख) उत्तरकाण्ड - 11 दोहे से 20 दोहे तक
ग) रामचरित मानस से संबंधित प्रश्न

**इकाई-4 गीतावली, कवितावली** (8 घंटे)

क) गीतावली - बाल्यकाण्ड- पद संख्या 9, 91, आयोध्याकाण्ड- पद संख्या 03, 10, 28, सुंदरकाण्ड-पद संख्या 21, 42, उत्तरकाण्ड- पद संख्या 23, 38, 69
ख) कवितावली- बाल्यकाण्ड- पद संख्या 1, 4, 17, आयोध्याकाण्ड- पद संख्या 11, 20, उत्तरकाण्ड- पद संख्या 37, 47, 97, 128, 129,
ग) गीतावली तथा कवितावली से संबंधित आलोचनात्मक प्रश्न

**इकाई-5 विनयपत्रिका** (8 घंटे)

क) पद संख्या 01, 45, 79, 87, 90, 101, 105, 114, 115, 198
ख) विनयपत्रिका से संबंधित प्रश्न
ग) तुलसीदास की दार्शनिक चेतना

**संभावित संदर्भ ग्रन्थ सूची :**


1. गोस्वामी तुलसीदास - रामचंद्र शुक्ल
2. तुलसी दर्शन - डॉ बलदेव मिश्र
3. तुलसी मीमांसा - डॉ उदयभान सिंह
4. तुलसी विविध संदर्भों में - डॉ वचन देव कुमार
5. तुलसी साहित्य और साधना - डॉ इंद्रपाल सिंह



डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

डॉ. च[illegible]कान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
[illegible]-176215

6. लोकवादी तुलसीदास - विश्वनाथ त्रिपाठी
7. रामचरित मानस – गोस्वामी तुलसीदास गीताप्रेस गोरखपुर
8. गीतावली – गोस्वामी तुलसीदास गीताप्रेस गोरखपुर
9. कवितावली – गोस्वामी तुलसीदास गीताप्रेस गोरखपुर
10. विनयपत्रिका – गोस्वामी तुलसीदास गीताप्रेस गोरखपुर

डॉ. प्रीति सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धौलाधार परिसर-1 धर्मशाला-176215

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

# हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)

## भाषा संकाय (हिंदी विभाग)

## स्नातकोत्तर (हिंदी) चतुर्थ सेमेस्टर

**पाठ्यक्रम कूट :** HIL-418 **श्रेयांक :** 04

**पाठ्यक्रम शीर्षक :** गुरु नानक देव : एक विशेष अध्ययन

**पाठ्यक्रम शिक्षक :** डॉ0 प्रिया शर्मा

**श्रेयांक : 4** (एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे, प्रयोगशाला/व्यावहारिक/ट्युटोरियल/शिक्षक नियंत्रित गतिविधियाँ कार्य के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतंत्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित कार्य/वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पर लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के समान है।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य:**

- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को गुरु नानक देव की युगीन विशिष्टता से परिचित करवाना है।
- मध्ययुग के महान लोकनायक के गहन अध्ययन से छात्रों को नूतन प्रेम, नई अभिप्रेरणा उपलब्ध होगी।
- छात्रों के व्यक्तित्व–विकास, ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष को उजागर करना है।
- पाठ्यक्रम का उद्देश्य, संवेदना, भाव–दृष्टि, समाज सुधारक की अन्तर्दृष्टि आदि से छात्रों को परिचित करवाना है।

**पाठ्यक्रम परिणाम:**

- गुरु नानक देव के विशेष अध्ययन नामक पाठ्यक्रम द्वारा छात्रों के चरित्र का निर्माण और विकास होगा।
- नानक के जीवन अनुभवों और उपलब्धियों को चित्रित करने से छात्रों की समझ का विकास होगा।

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

- गुरु नानक देव के जीवन–वृत्त के अध्ययन से छात्रों को बेहतर अंतर्दृष्टि प्रदान करना ही पाठ्यक्रम का परिणाम है।

**उपस्थिति अनिवार्यता:**

पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्रों का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्रों को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

**मूल्यांकन मापदंड:**

1. मध्यावधि परीक्षा – 40%
2. सत्रांत परीक्षा – 120%
3. सतत आंतरिक मूल्यांकन – 40%

**पाठ्यक्रम विषयवस्तु:**

**इकाई – 1 गुरु नानक देव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व** **(08 घंटे)**

- पृष्ठभूमि एवं सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियां
- गुरु नानक देव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- गुरु नानक देव : एक युग पुरुष

**इकाई – 2 गुरु नानक देव का सामाजिक अवबोध** **(08 घंटे)**

- 'आसा की वार' : धार्मिक एवं सामाजिक पाखंडों पर प्रहार
- 'वार माझ' : धार्मिक एवं दार्शनिक मान्यताओं की चर्चा
- 'मलार की वार' : यथार्थ धर्म ग्रहण करने की भावना
- व्याख्या एवं समीक्षा –
  1. काइआ ब्रहमा मनु है धोती–20,
  2. सेवकु दासु भगतु जनु सोई–21,
  3. काची गागरि देह दुहेली–22,
  4. माणस खाणे करहिं निवाज–34,
  5. गुरु समंदु नदी सभ सिखी,

डॉ. भीमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

6. नानक अंधा होइ कै दसै राहै सभसु मुहाए साथै,
7. गऊ बिराहमण कउ करू, लावहु गोबरि तरणु न जाई–33,
8. भंडि जंमीऐ–41, खुरासान खसमाना–39

(नानकवाणी, जयराम मिश्र)

**इकाई – 3 गुरु नानक वाणी में भक्ति के विविध रूप** **(08 घंटे)**

- भक्ति : व्युत्पति एवं स्वरूप
- नानकवाणी : भक्ति रस की परिकल्पना
- नानकवाणी में श्रृंगारिक–बोध
- नानकवाणी में वैधी भक्ति का खंडन
- व्याख्या एवं समीक्षा –
  1. राम रसाइणि इहु मनु राता, पृष्ठ संख्या 288
  2. राम रसाइणु गुर मुखि चाखै, पृष्ठ संख्या 288
  3. राम नाम सरणाई, पृष्ठ संख्या 291 (नानकवाणी, जयराम मिश्र)
  4. बाबीहा प्रिउ बोले कोकिल बाणीआ–2 (नानकवाणी, वारहमाहा, पृ0 24)

**इकाई – 4 गुरु नानक वाणी की दार्शनिक चेतना** **(08 घंटे)**

- नानकवाणी : ब्रह्म–जीव संबंध
- मोक्ष एवं नानकवाणी
- व्याख्या एवं समीक्षा –
  1. पंच ततु मिली काइआ कीनी, पृष्ठ संख्या 632 (नानकवाणी)
  2. करम खंड की वाणी जोरू, पृष्ठ संख्या 97 (नानकवाणी)
  3. मुकति भई बांधन गुरि खोल्हे, पृष्ठ संख्या 474 (नानकवाणी)

**इकाई – 5 नानकवाणी में साधना के तत्त्व** **(08 घंटे)**

- नानकवाणी : गुरु का महत्त्व
- नाद–महिमा

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

- कक्षा में संवाद : सिद्ध गोसटि
- व्याख्या एवं समीक्षा –
  1. अनहदो अनहदु वाजै रूण झुण कारे राम, नानकवाणी आसा, पहला–1
  2. अनहद सबद सुहावणे पाइऐ गुर वीचारि, पृष्ठ संख्या 118 (नानकवाणी)

**संभावित ग्रंथ सूची:**

**आधार ग्रंथ**


| | |
|---|---|
| 1. गरु नानक देव जीवन और दर्शन | जयराम मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद |
| 2. नानकवाणी | जयराम मिश्र, मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद |
| 3. नवम गुरु पर बारह निबंध | रमेश कुंतल मेघ (संपादक), गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर |
| 4. गुरु नानक देव और विद्रोह की भूमिका | महीप सिंह, दिल्ली सिंह सभा |
| 5. गुरु नानक व्यक्तित्व एवं कृतित्व | महेंद्र सिंह प्रभाकर, ज्ञानपीठ, पटना |
| 6. संत काव्य का दार्शनिक विश्लेषण | मनमोहन सहगल, भारतेंदु भवन, चंडीगढ़ |
| 7. गुरु ग्रंथ साहब : एक सांस्कृतिक सर्वेक्षण | मनमोहन सहगल, भाषा विभाग, पटियाला |
| 8. गुरु नानक देव | नरेंद्र पाठक, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली |
| 9. गुरु नानक देव की धर्म साधना | प्रिया शर्मा, सतीश बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली |
| 10. गुरु नानक संगीतज्ञ | डी. एस. नरूला, न्यू बुक कंपनी, जालंधर |
| 11. जगत गुरु बाबा | दिलीप सिंह दीप, अमन प्रकाशन, चंडीगढ़ |
| 12. गुरु नानक रचनावली | रत्न सिंह जग्गी, भाषा विभाग, पटियाला |


**संदर्भ ग्रंथ**


| | |
|---|---|
| 13. श्री गुरु ग्रंथ साहिब | मनमोहन सहगल, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ |
| 14. ट्रांसफ़ोरमेशन ऑफ़ सिखईजम | जी. सी. नारंग, न्यू बुक सोसायटी, दिल्ली |
| 15. नानक साइर एव कहत है | लाजिंदर सिंह लांबा, पंजाबी बुक स्टोर, दिल्ली |
| 16. भक्ति का विकास | मुंशी राम शर्मा, चौखंबा विद्या भवन, वाराणसी |
| 17. लाइफ़ ऑफ़ गुरु नानक देव | करतार सिंह, जयदेव सिंह, जोगिंदर सिंह, अमृतसर |


डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. चन्द्रकान्त सिंह
प्रभारी (हिंदी)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला-176215

**हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय**
Central University of Himachal Pradesh
**(केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत स्थापित)**

**भाषा संकाय (हिंदी विभाग)**
**स्नातकोत्तर (हिंदी) चतुर्थ सेमेस्टर**

**पाठ्यक्रम कूट :** HIL- 420 (क) श्रेयांक : **4**
**पाठ्यक्रम शीर्षक : निराला : एक विशेष अध्ययन**

**श्रेयांक :** 4 [ एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत सम्पर्क के घंटे 10, प्रयोगशाला / शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों / ट्युटोरियल / व्यावहारिक कार्य के घंटे और अन्य कार्य 5 जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य , निर्धारित कार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध पत्र लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के घंटे के समान है 15।

**पाठ्यक्रम उद्देश्य**

- प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य निराला के जीवन, रचना-कर्म एवं सृजनशीलता के संदर्भ में विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान करना है |
- मुक्त काव्य के संदर्भ में निराला के अवदान को रेखांकित करना |

**पाठ्यक्रम परिणाम:**

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी निराला के जीवन-दर्शन को समझ सकेंगे |
- निराला के जीवन और रचना-प्रक्रिया की गहन टकराहट को समझने में सहायता मिलेगी |
- निराला के काव्य-विवेक का परिज्ञान |
- निराला की रचनाओं के पाठ से विद्यार्थियों की साहित्यिक संवेदना का विकास होगा |
- कविता के इतर अन्य विधाओं में प्रकाशित निराला की रचनाओं की जानकारी |

**उपस्थिति अनिवार्यता:**
पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है । न्यूनतम %75 कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है ।

**मूल्यांकन मापदंड**:

1. मध्यावधि परीक्षा : 40
2. सत्रांत परीक्षा : 120
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन: 40

**<u>पाठ्यक्रम विषयवस्तु–</u>**

**इकाई 1- निराला का जीवन-दर्शन (08 घंटे)**

क) निराला का जीवन और सृजन

ख) निराला : व्यक्तित्व और विचारधारा
ग) निराला और नवजागरण

**इकाई 2- निराला की काव्य-दृष्टि (08 घंटे)**

क) निराला की रचना-प्रक्रिया
ख) मुक्त छंद और निराला
ग) निराला की काव्य-भाषा के विविध रूप

**इकाई 3-निराला का काव्य (08 घंटे)**

क) निराला के काव्य में जागरण का स्वर
ख) निराला के काव्य में गीति तत्व
ग) लम्बी कविता की अवधारणा और निराला
घ) कविताओं की व्याख्या एवं समीक्षा – ( 'सरोज स्मृति', 'तोड़ती पत्थर', 'कुकुरमुत्ता', 'बाँधो न नाँव इस ठाँव बंधु')

**इकाई 4- निराला के उपन्यास (08 घंटे)**

क) निराला की कहानी-कला
ख) निराला की औपन्यासिक चेतना
ग) उपन्यास की व्याख्या एवं समीक्षा – ('चोटी की पकड़')

**इकाई 5- निराला के निबन्ध (08 घंटे)**

क) निराला की निबंध चेतना
ख) प्रमुख निबन्धों की व्याख्या एवं समीक्षा – ( 'पंत और पल्लव', 'रवीन्द्र कविता कानन', परिमल की भूमिका)

**<u>संभावित सन्दर्भ ग्रंथ सूची –</u>**


1. छायावाद नामवर सिंह
2. निराला की साहित्य साधना रामविलास शर्मा
3. निराला : एक पुनर्मूल्यांकन डॉ. ए. अरविंदाक्षन (संपादन)
4. क्रांतिकारी कवि निराला बच्चन सिंह
5. निराला : आत्महंता आस्था दूधनाथ सिंह
6. कवि निराला नंददुलारे वाजपेयी

7. निराला : कृति से साक्षात्कार  नंदकिशोर नवल
8. निराला काव्य की छवियाँ  नंदकिशोर नवल
9. कथा शिल्पी निराला  बलदेव प्रसाद मेहरोत्रा
10. अज्ञेय के उपन्यास  गोपाल राय
11. निराला की कविताएँ (मूल्यांकन और मूल्यांकन)  परमानन्द श्रीवास्तव (सम्पादन)

**हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय *विश्वविद्यालय, धर्मशाला***
**स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम**
**चतुर्थ – सेमेस्टर**
**प्रश्नपत्र - वैकल्पिक प्रश्न पत्र : संत नामदेव : एक विशेष अध्ययन**
**पाठ्यक्रम कूट संकेत HIL – 418 (क)**
**4 क्रेडिट**

**उत्तीर्णांक -**
**अधिकतम अंक - 200 मध्यावधि परीक्षा - आंतरिक मूल्यांकन -**
**सत्रांत परीक्षा -**

**पाठ्यक्रम उद्देश्य**

- प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य नामदेव के जीवन, रचना-कर्म एवं सृजनशीलता के संदर्भ में विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान करना है |
- भक्ति- काव्य के संदर्भ में नामदेव के अवदान को रेखांकित करना |

**पाठ्यक्रम परिणाम:**

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी नामदेव के जीवन-दर्शन को समझ सकेंगे |
- नामदेव के जीवन और रचना-प्रक्रिया की गहन टकराहट को समझने में सहायता मिलेगी |
- नामदेव के काव्य-विवेक का परिज्ञान |
- नामदेव की रचनाओं के पाठ से विद्यार्थियों की साहित्यिक संवेदना का विकास होगा |

**उपस्थिति अनिवार्यता:**
पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है । न्यूनतम %75 कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है ।

**मूल्यांकन मापदंड**:

1. मध्यावधि परीक्षा : 40
2. सत्रांत परीक्षा : 120
3. सतत आतंरिक मूल्यांकन: 40

**इकाई - 1 : संत नामदेव का जीवन वृत्त**

- संत नामदेव का बाल्यकाल :जन्म,वंश परंपरा, पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि
- संत नामदेव की शिक्षा दीक्षा
- संत नामदेव की व्यावसायिक पृष्ठभूमि एवं अभिरुचियाँ
- जनमानस में संत नामदेव और जनश्रुतियाँ: विभिन्न यात्राएं एवं चमत्कारिक घटनाएं

**इकाई - 2 भक्ति आंदोलन और संत नामदेव**

- भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि (सामाजिक ,राजनीतिक,आर्थिक, धार्मिक,सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिदृश्य में)
- संत ज्ञानेश्वर और संत नामदेव : शिष्य परंपरा, भक्ति प्रसार हेतु यात्राएं एवं योगदान
- संत नामदेव की भक्ति का स्वरूप: दार्शनिक पृष्ठभूमि, वारकरी और महानुभाव संप्रदाय
- संत काव्य धारा में संत नामदेव का स्थान एवं समकालीन संत संप्रदाय

**इकाई 3 : संत नामदेव का साहित्य : प्रमुख पद एवं व्याख्याएं**

- साहित्यिक परिचय एवं पृष्ठभूमि
- अभंगवाणी (हिंदी भाषा) (प्रमुख व्याख्या पद)
- अभंगवाणी (मराठी भाषा) (प्रमुख व्याख्या पद)
- साखी एवं शबद (संकलित गुरु ग्रंथ साहिब) (प्रमुख व्याख्या पद)
- दोहे : (प्रमुख व्याख्या पद)

**इकाई - 4 संत नामदेव के साहित्य का काव्य सौष्ठव और उसकी प्रवृत्तियाँ**

- संत नामदेव का आत्मचिंतन और अभिव्यक्ति
- संत नामदेव का काव्य : कला पक्ष एवं भाव पक्ष
- संत नामदेव के काव्य में संगीतात्मकता एवं गेयता
- संत नामदेव के काव्य में लोकानुरंजन की प्रवृत्ति
- संत नामदेव के काव्य में लोकभाषा के प्रयोग (मराठी, हिंदी एवं पंजाबी)

**इकाई 5 : संत नामदेव और उनकी वर्तमान प्रासंगिकता**

- संत नामदेव और उनका मानवीय मूल्य बोध
- संत नामदेव का हिंदी साहित्य में योगदान
- संत नामदेव और उनके साहित्य का सामाजिक उत्थान में योगदान( सामाजिक, धार्मिक,राजनीतिक,आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक योगदान)

**संदर्भ ग्रंथ**


1. संत नामदेव की हिंदी पदावली, डा. भागीरथ मिश्र व डा. राजनारायण मौर्य, प्रकाशन विभाग, पूना विश्वविद्यालय, 1964
2. हिंदी निर्गुण काव्य का प्रारंभ और संत नामदेव की हिंदी कविता, डा. शं. के. आड़कर, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1972
3. महाराष्ट्र के संतों का हिंदी काव्य, डा. प्रभाकर सदाशिव पंडित, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 1991
4. मराठी संतों की हिंदी वाणी, डा. आनंद प्रकाश दीक्षित, पंचशील, जयपुर, 1981
5. हिंदी निर्गुण संत परम्परा में संत नामदेव का योगदान, डा. राजनरायण मौर्य
6. महाराष्ट्र का हिंदी लोक काव्य, कृ. ग. दिवाकर, हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ, 2020
7. श्री नामदेव गाथा, महाराष्ट्र शासन द्वारा प्रकाशित